ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अगस्त-२०१४

अगस्त-2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 3 ◆ उदयपुर

आओ हम सब मिल-जुलकर
इसी कर्म में लग जावें
सत्यार्थ-शिक्षा फैला के
धरती को स्वर्ग बनावें

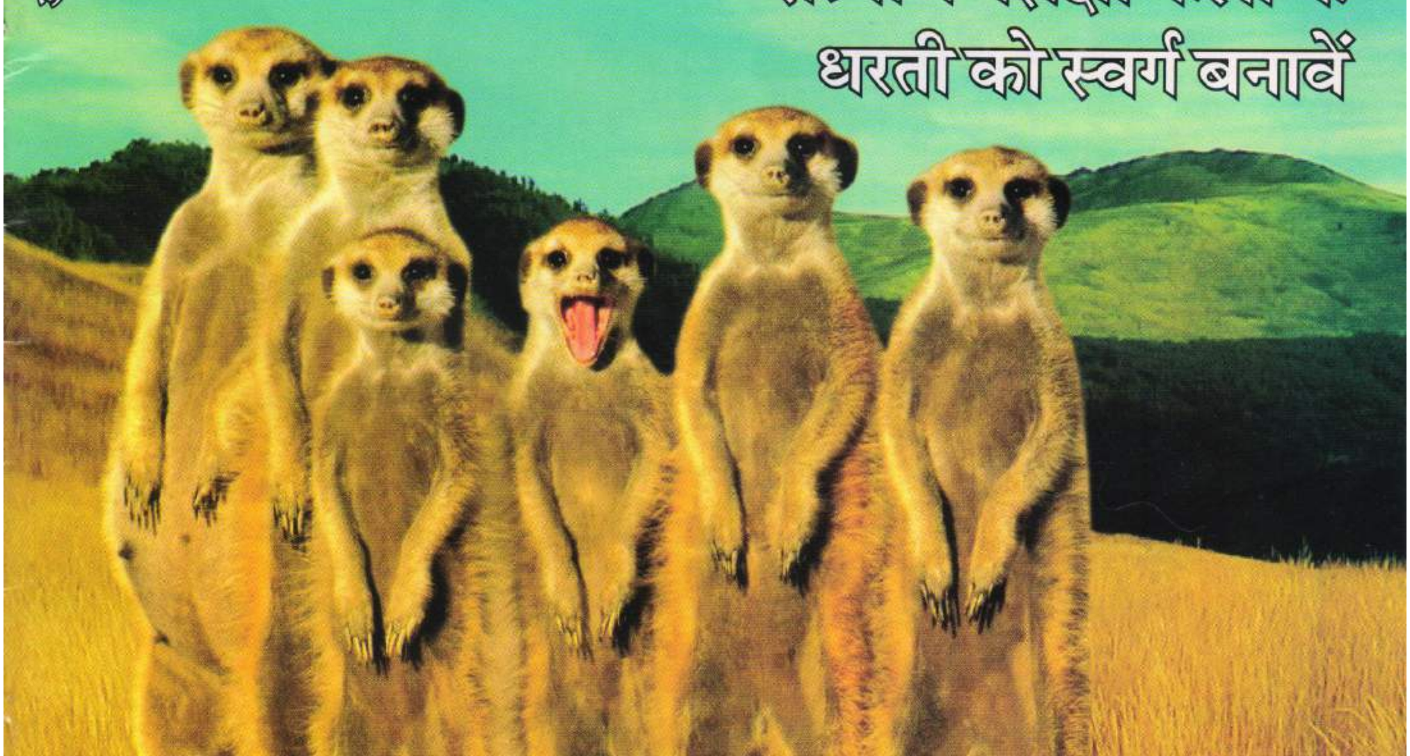

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ३२

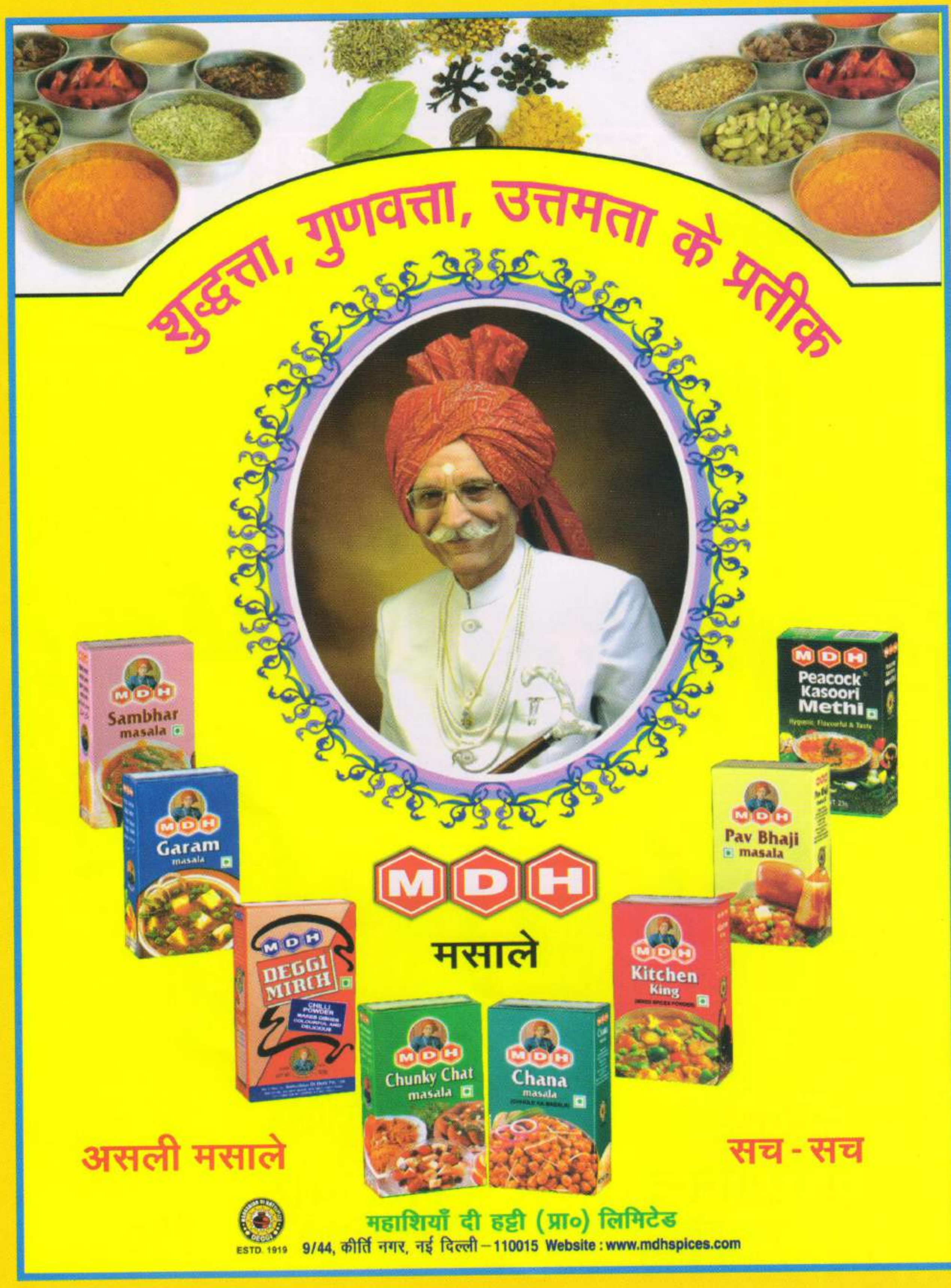
शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमहयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
श्रावण शुक्ल एकादशी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

August- 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन	३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २५

हलचल २६

०४ वेद सुधा
०७ घातक है साहित्यिक मिलावट
१३ क्या होगा कानून बनाकर?
१३ सत्यार्थप्रकाश पहेली-७
१४ धर्म पर चलें
१८ संपूर्ण आजादी का उद्घोष
१९ विजय पालकी सजने दो......
२० रामकथा के कुछ विवादास्पद प्रसंग
२२ विद्या और अविद्या
२३ हिन्दी और बदलता आर्थिक परिदृश्य
२७ वैदिक विज्ञान में सोम
२८ पंचमहायज्ञ
२९ कथा सरित
३० स्वास्थ्य

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

पाप के छह कारण

न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता।। – ऋग्वेद ७/८६/६

अर्थ- (वरुण) हे वरुण भगवन्! {मुझमें तो} (स्वः) अपना (सः) वह (दक्षः) बल (न) है नहीं, (ध्रुतिः) बुरे कामों में स्थिर रखने वाली आदतें (सा) वह (सुरा) शराब (मन्युः) क्रोध (विभीदक) जूआ (अचित्तिः) नासमझी और (अनृतस्य) असत्य व्यवहार में (प्रयोता) डालनेवाली (स्वप्नश्चनइत्) प्रमादरूप निद्रा भी, ये सब (ज्यायान्) शक्तिशाली बनकर (कनीयसः) मुझ अल्प शक्ति वाले के (उपारे) समीप (अस्ति) विद्यमान् रहते हैं {इसलिए हे प्रभो! इनसे बचने के लिए अपना बल मुझे प्रदान करो।}

प्रस्तुत मन्त्र में पाप-कर्म और उनके कारणों को कुछ अधिक विस्तृत और स्थूलरूप में उपस्थित किया गया है, जिससे सर्वसाधारण भक्तजनों को पाप का कारण जानकर उससे बचने में अधिक सहायता मिल सके।

इस सूक्त में प्रभु-दर्शन के लिए तड़प रहे भक्त हृदय का चित्र खेंचा गया है। प्रभुदर्शन का प्यासा भक्त अनन्यभाव से प्रभु के गुणों का चिन्तन करता है। उन गुणों को वह अपने में धारण करके अपने-आपको पवित्र बनाता है, फिर भी उसे अभी तक प्रभु के दर्शन नहीं हो पाते। वह इसके कारणों पर विचार करता है और महात्माओं से भी इसका कारण पूछता है। उसे मालूम होता है कि अभी भी कोई पाप बचा है जिसके कारण उसे प्यारे प्रभु के दर्शन नहीं हो रहे हैं। वह और अधिक तन्मयता से प्रभु-भक्ति में लग जाता है और प्रभु के पवित्र गुणों को अपने में और अधिक गहराई से धारण करने लग जाता है। वह अपनी समझ में अपने आपको 'वसिष्ठ' बना लेता है- पूर्णरूप से प्रभु के गुणों को अपने अन्दर धारण करने वाला बना लेता है। अपनी समझ में वह समझने लगता है कि अब तो मुझमें कोई भी पाप नहीं रह गया और इसलिए वह प्रभु से कहने लगता है कि हे महाराज! अब तो मैं 'वसिष्ठ', पूर्ण पवित्र बन गया, अब तो मुझे अपने दर्शन दो, अब तो मुझे अपने आनन्द का अमृत पान कराओ, परन्तु अब भी उसे प्रभु प्यारे के दर्शन नहीं हो रहे हैं। वह देखता है कि प्रभु के दर्शन न होने का एकमात्र कारण तो मेरा कोई-न-कोई पाप ही हो सकता है, इसलिए मैं अपने आपको कितना ही 'वसिष्ठ' कितना ही प्रभुगुणाविष्ठ, पवित्र हृदयवाला समझता रहूँ, परन्तु क्योंकि मुझे भगवान के दर्शन नहीं हो रहे, इसलिए अवश्य ही मुझमें कहीं-न-कहीं कोई पाप है। जब तक मैं पाप से सर्वथा दूर नहीं हो जाता तब तक प्रभु नहीं मिलेंगे, परन्तु मैं पाप से सर्वथा मुक्त कैसे होऊँ? मैं तो अपने सारे प्रयत्न कर चुका। प्रेम से गद्गद होकर भगवान् की भक्ति करता हूँ। उनके गुणों का गहरा चिन्तन और मनन करके मैंने उन्हें अपने आत्मा में धारण कर लिया है। मैं अपनी समझ में प्रभु के गुणों को पूर्ण रीति से अपने में बसाने वाला वसिष्ठ हो गया हूँ, फिर भी न जाने कहाँ से मेरे जीवन में पाप आ धंसता है। मेरे किये तो यह पाप मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा। मैं अपनी अकेली शक्ति से तो पूर्ण निष्पाप नहीं बन सकूँगा। मेरा अकेला बल पापपुन्ज का संहार करने में समर्थ न हो सकेगा। ऐसा विचार करके भक्त, फिर भगवान् की ओर आँख लगाता है, फिर उनसे विनती करता है। उनसे कहता है- ''हे महाराज मुझमें तो अपना वह बल है नहीं जो पाप-शत्रु को पूरी तरह मार सके। मैं तो अपना सारा बल लगा चुका हूँ, परन्तु उससे तो पूरी तरह सफलता नहीं मिली है, इसलिए हे प्रभो! आप ही अपना बल मुझे दीजिए। आपके बल से ही मेरा पाप-शत्रु मारा जा सकेगा। आप ही मेरी सहायता कीजिए। आपकी सहायता से ही मैं पाप का पूर्ण विजय कर सकूँगा। हे प्रभो! अपनी कृपा करो और पाप को मुझसे दूर भगाओ। मैं निष्पाप होकर आपके दर्शन पाने के लिए तड़प रहा हूँ।''

मन्त्र में भक्त से केवल यह कहलाया गया है कि ''हे वरुण भगवान्! मुझमें तो अपना बल है नहीं।'' यह मन्त्र में नहीं कहलाया गया है कि ''इसलिए हे प्रभो! इन पापों से बचने के लिए अपना बल मुझे प्रदान करो'', परन्तु प्रसंग को देखते हुए पहले वाक्य के पश्चात् दूसरा वाक्य मन्त्र में अवश्य कहा जाना चाहिए। मन्त्र का पूर्ण अभिप्राय तभी व्यक्त होता है, इसलिए हमने मन्त्र का अर्थ करते हुए इस दूसरे वाक्य का अध्याहार करके उसे इन ( ) कोष्ठकों में रख दिया है। सभी भाष्यकार प्रसंगानुसार अध्याहार का आश्रय लिया करते हैं। जो बात किसी सन्दर्भ के वाक्यों से बिना कहे हुए निकल रही होती है, उसी को शब्दों में स्पष्ट कर देने

का नाम अध्याहार है। "हे वरुण भगवान्। मुझमें तो अपना वह बल है नहीं" मन्त्र का यह वाक्य स्वयं ही "इसलिए हे प्रभो! अपना बल मुझे प्रदान करो" इन शब्दों को सुझा देता है।

भगवान् से पाप-विजय में सफलता पाने के लिए भक्त जो बल की याचना करता है, उसके प्रसंग में ही मंत्र में पाप के कारणों की भी कुछ विस्तृत विवेचना हो जाती है। भक्त भगवान् से कह रहा है कि- "हे प्रभो! मैं तो अल्पशक्तिवाला हूँ और यह जो पाप मुझे आ दबोचता है, वह मुझसे बड़ी शक्तिवाला है, तभी तो मेरा उससे पूरी तरह छुटकारा नहीं हो पाता। देखो! कितने मार्गों से आकर यह पाप मुझे अपने वश में करने के लिए मेरे पास आ खड़ा होता है। आप अपनी शक्ति मुझे दीजिए।" इसी प्रसंग में भक्त के मुँह से पाप के कई कारणों की ओर निर्देश करा दिया जाता है। प्रस्तुत मंत्र में ध्रुति, सुरा, मन्यु, विभीदक, अचित्ति और स्वप्न ये छह कारण हमारे पापमय जीवन के बताये हैं। इनमें से सुरा और विभीदक ये दो हमारे द्वारा किये जाने वाले उन स्थूल कर्मों के उपलक्षण हैं जो सम्पन्न हो जाने से हमसे पाप करा देते हैं और शेष चार पाप के हमारे मानसिक कारणों की ओर निर्देश करते हैं। पहले हम पाप के इन मानसिक कारणों के स्पष्टीकरण में कुछ शब्द कहते हैं।

"ध्रुतिः" शब्द यहाँ आदत या अभ्यास के लिए प्रयुक्त हुआ है। "ध्रुति" शब्द स्थिति अर्थवाली "ध्रु" धातु से बनता है। इसका शब्दार्थ है स्थिरता की अवस्था। एक काम को देर तक करते-करते हमारे मन में उसकी स्थिरता, दृढ़ता उत्पन्न हो जाती है, फिर वह हमें सरलता से नहीं छोड़ सकता। विशेष प्रयत्न और ध्यान न होने पर भी हमसे वह कार्य होने लग जाता है। किसी काम के प्रति मन की इस अवस्था को प्रचलित भाषा में आदत या अभ्यास कहते हैं। यदि हमें किसी बुरे काम का अभ्यास पड़ जाए तो हम अनेक बार न चाहते हुए भी केवल अभ्यासवश वह बुरा काम कर बैठते हैं। एक व्यक्ति को गाली देने का अभ्यास रहा है। उसने अब गाली न देने का निश्चय कर लिया है, परन्तु पुराने अभ्यास के कारण वह अवसर आने पर न चाहते हुए भी गाली दे बैठता है। इसलिए जो पाप से बचना चाहता है, उसे आत्म निरीक्षण करके देखना चाहिए कि उसमें किस-किस पाप-कर्म की ध्रुति आदत पड़ गई है। **उसे प्रयत्नपूर्वक उन पापों की ध्रुति या अभ्यास को तोड़ना चाहिए।** जब तक उनका अभ्यास नहीं टूट जाता तब तक कई बार न चाहते हुए भी वह अभ्यास हमसे उन पापों को करा देगा।

"अचित्ति" अज्ञान को, नासमझी को कहते हैं। हमारे पापों का मूलकारण हमारा अज्ञान ही होता है। हम वस्तुस्थिति को पूरी तरह से न समझने के कारण ही पाप कर बैठते हैं। यदि हमें अपना, अपनी परिस्थिति का, अपने कार्यों का और उनके परिणामों का पूरा ज्ञान हो तो हमसे कभी भी कोई पाप-कर्म न हो। अज्ञान या अधूरा ज्ञान ही हमसे पाप कराता है। जितना-जितना हमारा ज्ञान पूर्णता की ओर जाता जाएगा उतना-उतना हमारे पाप-कर्म घटते जाएँगे। जो पाप से बचना चाहता है, **उसे अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिए-अपनी "अचित्ति" दूर करनी चाहिए।**

"स्वप्न" का अर्थ निद्रा होता है। इस प्रकरण में स्थूल निद्रा अर्थ संगत नहीं हो सकता। **यहाँ प्रमादरूप निद्रा से अभिप्राय है।** जब हमारे मन में प्रमाद की अवस्था आ जाती है तब हमारा संचित ज्ञान भी लुप्त हो जाता है। जैसे हमें नींद में कुछ होश नहीं रहता वैसे ही प्रमाद नामक मन की अवस्था में भी हमें ज्ञान नहीं रहता। प्रमाद से हमारे मन में एक प्रकार की बेहोशी-सी छा जाती है। मन की सतर्कता, निपुणता, जागृति जाती रहती है और इस प्रमाद की अवस्था में हम कई पाप कर बैठते हैं, जिन्हें यदि हमारा मन सतर्क, चुस्त रहता तो हम कभी न करते। अचित्ति की अवस्था में तो हमें ज्ञान ही नहीं होता, स्वप्न या प्रमाद की अवस्था में हम संचित ज्ञान को अपने मन की मन्थरता के कारण भूल-सा जाते हैं। **जो पाप से बचना चाहता है उसे मन में मन्थरता और प्रमाद कभी नहीं आने देने चाहिएँ।**

"मन्यु" क्रोध को कहते हैं। जब हमें क्रोध का आवेश हो जाता है तब भी हमारे मन की विचार-शक्ति दब जाती है। क्रोध का विकार हमारे मन को अन्धा कर देता है। क्रोध मन को दबाकर सोचने-विचारने के अयोग्य कर देता है और इस क्रोध-जन्य अविवेक की अवस्था में भी हम अनेक पाप कर बैठते हैं। जो पाप से बचना चाहता है, उसे क्रोध नहीं आने देना चाहिए। यहाँ क्रोध मन के काम, लोभ, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या आदि सभी विकारों का उपलक्षण है। ये सभी विकार जब मन में आते हैं तब उसे विचारशून्य करके अन्धा कर देते हैं, क्योंकि वेद में अन्यत्र इन सभी विकारों के जीतने का वर्णन हैं, इसलिए यहाँ क्रोध सभी विकारों का उपलक्षण है। **जो पाप से बचना चाहता है, उसे अपने मन को ऐसा बनाना चाहिए, जिसमें काम, क्रोध, आदि विकार न उठ सकें।**

अब "सुरा" और "विभीदक" को लीजिए। "सुरा" शराब को कहते हैं। हमारी आत्मा मन या मस्तिष्क की सहायता से अपने

विचार आदि की शक्तियों को प्रकट करता है। शराब पीने से हमारे मस्तिष्क के तन्तु शिथिल पड़ जाते हैं, इसलिए हममें विचार की पटुटा नहीं रहती। शराब का सेवन हमारी बुद्धि को ठिकाने नहीं रहने देता और उस बुद्धि की अपटुता की अवस्था में हमसे कितने ही पाप के कार्य हो जाते हैं। **जो पाप से बचना चाहता है, उसे बुद्धिनाशक सुरा-पान से पृथक् रहना चाहिए।** यहाँ सुरा को बुद्धि के विलम्पक अफीम, तम्बाकू, भंग, गाँजा आदि सभी मादक द्रव्यों का उपलक्षण समझना चाहिए। **जो पाप से दूर रहना चाहता है, उसे मादक द्रव्यों के सेवन से दूर रहना चाहिए।**

''विभीदक'' जूए के पासों को कहते हैं। जो पाप से बचना चाहता है, उसे जूआ नहीं खेलना चाहिए। जूए में हम बिना प्रयत्न के दूसरों की प्रयत्न द्वारा कमाई हुई सम्पत्ति को अपनी बनाना चाहते हैं। जूआ हमें आलसी और अपरिश्रमी बनाता है। जूआ हमारे अन्दर दूसरों की परिश्रमपूर्वक उपार्जित सम्पत्ति को, जिस पर हमारा कोई अधिकार नहीं, हड़प करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है। जूए के द्वारा हम दूसरे की, अधिकारपूर्वक प्राप्त सम्पत्ति को छीनकर उसे और उसके आश्रितों को दुःख में निमग्न करते हैं। आलसी और अपरिश्रमी होना, दूसरे के अधिकारों को हड़प जाने की प्रवृत्ति होना, हमें पापी बनाते हैं। जो पाप से पृथक् रहना चाहता है, उसे जूए से पृथक् रहना चाहिए। यहाँ ''विभीदक'', अर्थात् जूआ उन चोरी आदि सभी बुरे कर्मों का उपलक्षण है, जिनसे हम अपना कोई अधिकार न होते हुए, दूसरे की अधिकार-प्राप्त सम्पत्ति को हड़प जाना चाहते हैं। **जो पाप से बचना चाहता है, उसे जूआ खेलना अथवा चोरी आदि करके किसी के अधिकारों को नहीं हड़पना चाहिए।**

मंत्र में पापों से बचने के लिए भगवान् से बल माँगा गया है। उसकी सहायता और कृपा की प्रार्थना की गई है, तो क्या भगवान् हमारी प्रार्थना सुनकर हमारे पापों को काट देते हैं? हाँ, अवश्य काट देते हैं। जो साधक प्रभु के प्रेम में तन्मय हो जाता है और उस प्रेम में भरकर गद्गद हृदय से प्रभु की भक्ति करता है- प्रभु के गुणों का कीर्तन करता है तो उस प्रेम से गद्गद भक्ति के परिणामस्वरूप प्रभु के गुणों को अपने अन्दर बसाकर वसिष्ठ बनने में लग जाता है, उस साधक के पाप परमात्मा काट देते हैं। साधक में जितनी शक्ति है, उसे जब वह सच्चे हृदय से अपने-आपको पवित्र बनाने के प्रयत्नों में पूरी तरह लगा चुकता है और इसके अनन्तर भगवान् से बल की प्रार्थना करता है, तब भगवान् उसे बल देते हैं। भगवान् उसमें वह शक्ति भर देते हैं, जिससे वह पाप को विजय करने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार अपने सच्चे भक्त के आत्मा को पापों का विरोध करने में शक्तिशाली बनाकर भगवान् उसके पाप काट डालते हैं। इस भाँति अपने-आपको पवित्र बनाने में लगा हुआ सच्चा प्रभु-भक्त जब भगवान् से प्रार्थना करता है तब वे उसकी प्रार्थना सुनते हैं और उसे और अधिक पवित्र बनने में सहायता देते हैं, परन्तु यहाँ पाप काटने और पाप के फल काटने में भेद समझ लेना चाहिए। भगवान् सच्चे भक्त के पाप तो काट देते हैं, उसे पवित्र बनने में सहायता देकर भविष्य में पाप नहीं करेगा, इसलिए इसके पाप तो कट गये परन्तु पाप के फल भगवान् नहीं काटते हैं। भक्त पहले जो पाप कर चुका है, उसका फल तो उसे भोगना ही पड़ेगा। पाप का फल दुःख होता है। पूर्व किये हुए पापों का दुःखरूप फल तो भक्त को किसी-न-किसी रूप में भोगना ही पड़ेगा। भले ही वह दुःख भक्त पश्चाताप् के दुःख के रूप में ही भोग ले। भक्तों को अपने किये पापों पर बड़ा पश्चाताप् हुआ करता है। उनका हृदय इन पापों के कारण स्वयं ही पछतावे के दुःख से जला करता है, हो सकता है कि प्रभु, भक्त के किसी पाप के फलस्वरूप में उसके इस 'पश्चाताप् दुःख' को ही पर्याप्त समझ लें। एक शब्द में, चाहे पश्चाताप् दुःख के रूप में हो और चाहे किसी अन्य प्रकार से प्राप्त दुःख के रूप में हो, भक्त को भी अपने पूर्वोपार्जित पापों का फल दुःख तो भोगना ही पड़ेगा। प्रभु-प्रार्थना भविष्य में होने वाले पाप को तो काट देती है, परन्तु पूर्वोपार्जित पाप के फल को नहीं काटती।

मंत्र में भगवान् से पाप काटने के लिए बल की प्रार्थना की गई है। भगवान् को यहाँ वरुण नाम से कहा गया है। यहाँ वरुण का अर्थ वरण करने योग्य न करके बचानेवाला करना चाहिए। इसके ये दोनों ही अर्थ होते हैं, परन्तु पाप से बचने की प्रार्थना में यहाँ वरुण का 'बचानेवाला' यह अर्थ ही अधिक स्वारस्य रखता है।

सुख के अभिलाषी हे मेरे आत्मन्! अपने-आपको पवित्र बनाने के मार्ग में चल। इसके लिए प्रभु की भक्ति करके अपने को वसिष्ठ बना ले और उनसे बल की प्रार्थना कर। वे 'बचानेवाले' वरुण प्रभु तुझे पाप काटनेवाला अपना बल देकर पवित्र बना देंगे।

लेखक- आचार्य प्रियव्रत 'वेद वाचस्पति'

(साभार-वरुण की नौका)

□□□

आत्म निवेदन

घातक है साहित्यिक मिलावट

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखिका वैंडी डोनिगर ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम है **'दि हिन्दूज-एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री'**। इसमें भारतीय इतिहास के अनेक तथ्यों को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत किया है। जो यतिवर लक्ष्मण अपने भाई तथा माता समान भाभी की सेवार्थ, पितृ-आदेश न होने पर भी १४ वर्ष जंगलों की खाक छानते हैं, सीता माता के चरणों की वन्दना तो नित्य करते हैं, पर मुख पर दीर्घ-दृष्टि भी नहीं डालते हैं, उनके बारे में उक्त पुस्तक में लिखा गया कि लक्ष्मण की काम-दृष्टि सीता पर थी। रानी लक्ष्मीबाई-अंग्रेजों के प्रति वफादार थी। ऐसी ही अनर्गल बातें इस पुस्तक में हैं। इस पुस्तक की जैकेट पर भगवान श्रीकृष्ण को नारी-नितम्बों पर बैठा दिखाया है। जब यह पुस्तक भारत में रिलीज हुयी तो 'शिक्षा बचाओ आन्दोलन' के अध्यक्ष दीनानाथ बत्रा ने भारतीय महापुरुषों, महानात्माओं का अपमान करने वाली तथा भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अपनी आहुति देने वाले जियालों के इतिहास को विकृत रूप में प्रस्तुत करने वाली इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु याचिका (सिविल तथा क्रिमिनल) दिल्ली की साकेत अदालत में प्रस्तुत की। बाद में इस पुस्तक के विश्व प्रसिद्ध प्रकाशक पेंग्विन बुक्स इण्डिया लि. ने न्यायालय के बाहर १० फरवरी को ही दीनानाथ बत्रा से समझौता करते हुए वचन दिया कि वे **तत्काल प्रभाव से उस पुस्तक को वापस ले रहे हैं तथा अपने खर्च पर सम्पूर्ण देश से उस पुस्तक की सभी प्रतियाँ एकत्र कराकर नष्ट कर देंगे। उन्होंने भविष्य में यह पुस्तक प्रकाशित नहीं करने का भी वचन दिया।** काश ऐसी सजगता सभी भारतीय आत्मसात करें।

बत्रा की सजगता व सतर्कता स्तुत्य है। पर यहाँ यह भी उल्लेख करना समीचीन होगा कि भारत के गौरव-रत्नों के इतिहास को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत करने वाली वैंडी डोनिगर एकाकी नहीं हैं। उनके अनेक भारतीय संस्करण हैं जिनके द्वारा विकृत

किया गया इतिहास दुर्भाग्य से आज भी भारत के विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। ऐसी ही पुस्तक है 'कल्चर इन ऐंशियेन्ट इण्डिया' इसमें शिवजी द्वारा दिए फल के कारण रावण द्वारा सीता का जन्म बताया है। आदित्य ब्रह्मचारी हनुमान को कामुक बताया है। रावण तथा लक्ष्मण द्वारा सीता से व्यभिचार की बात कही है। यह अभागा भारत ही ऐसा देश है जहाँ ऐसा गर्हित लिखा जा सकता है और विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा सकता है। इस सबके पैरोकार अत्यन्त प्रसिद्ध लोग हैं जो ऐसी बातों को हटा देना नहीं चाहते। **आपको आश्चर्य होगा कि यही मण्डली हस्ताक्षर अभियान चलाकर याचिका तैयार कर रही है जिससे डोनिगर की विवादित पुस्तक फिर से भारत में प्रसारित हो।** पर इसमें आश्चर्य ही क्या? जब तक यह हिन्दू कौम मदहोशी की नींद में इस कारण सोती रहेगी कि जिस तरह ग्राह से गज की रक्षा के लिए भगवान श्रीकृष्ण नंगे पैर भागे चले आए थे, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु प्रभु ही अवतार लेंगे तो यह सब कुछ होता रहेगा। श्री बत्रा ने इस स्वप्निल सोच से अपने को मुक्त कर ऐसे लेखकों के खिलाफ अभियान चला रखा है। 'कल्चर इन ऐंशियेन्ट इण्डिया' का उक्त निबन्ध भी न्यायालय के आदेश से उन्होंने निकलवाया। ऐसी प्रचुर सामग्री पाठ्य पुस्तकों में मिलती रही है। यथा- वैदिककाल में अतिथियों को गो मांस परोसा जाता था, महावीर स्वामी जी ने १२ वर्ष की लम्बी यात्रा में एक बार भी अपने वस्त्र नहीं बदले, जाटों ने सबको लूटा, रणजीत सिंह ने मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लम्बी सफेद दाढ़ी से झाड़ी थी, आर्य समाज ने राष्ट्रीय एकता को भंग करने का प्रयास किया, लाल-बाल-पाल आतंकवादी थे, रामायण-महाभारत मात्र कल्पना प्रसूत काव्य हैं आदि-आदि।

ग्रन्थों में प्रक्षेप की प्रवृत्ति को रेखांकित करते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि-

'व्यास जी ने चार सहस्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पाँच सहस्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् सब दश सहस्र श्लोकों के प्रमाण "भारत" बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में

पच्चीस और अब मेरी आधी उमर में तीस सहस्र, श्लोक युक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। **जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊँट का बोझा हो जायगा।'**

पाठकगण! जो लोग उक्त प्रकार से ग्रन्थों में मिलावट करते हैं यह अक्षम्य अपराध है। राजा भोज के समय में साहित्यिक प्रक्षेप को इतना गम्भीर माना जाता था कि ऐसे लोगों के हस्तछेदन का विधान था। परन्तु यहाँ हम बड़ी विनम्रता के साथ **उस क्षण का रेखांकन करना चाहेंगे जहाँ से ग्रन्थों में संशोधन/मिलावट प्रारम्भ होती है।** कभी-कभी अच्छे आशय के साथ ग्रन्थ-सुधार का मानस लेकर भक्तों द्वारा यह प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। परन्तु जब संशोधन की रेलगाड़ी एक बार चल पड़ती है फिर उसकी दिशा तथा रफ्तार को नियंत्रित नहीं किया जा सकता, इस बात को प्रमाणित करने हेतु प्रचुर सामग्री है जिससे एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है। **अगर आप अपने इतिहास, साहित्य तथा संस्कृति की रक्षा करना चाहते हैं तो निश्चित रूप से सचेष्ट होकर प्रयत्नपूर्वक साहित्य प्रक्षेप के प्रथम प्रयास को रोकिए अन्यथा फिर पछताने के अतिरिक्त कुछ भी हाथ न लगेगा।**

वैंडी डोनिगर ने जो कुछ लिखा निश्चित उसकी तीव्र भर्त्सना होनी ही चाहिए। बत्रा जी ने भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी की भाँति माननीय न्यायालय की शरण लेकर इस कुत्सित प्रयास को निरस्त किया, वे सभी के धन्यवाद के पात्र हैं। **काश! हर समाज में दीनानाथ बत्रा जैसे पवित्र बुद्धि वाले दृढ़ निश्चयी व्यक्ति हों।**

पर यहाँ हम यह निवेदन अवश्य करेंगे कि वैंडी डोनिगर ने जो कुछ लिखा, क्या वह उनकी अपनी कल्पना है? कदापि नहीं। यदि हम निष्पक्ष हैं तो हमे अपने गिरेबान में झाँकना चाहिए। योगिराज श्रीकृष्ण के अतिपावन उज्ज्वल चरित्र को पुस्तक की जैकेट के माध्यम से चित्रित करने में अपने कलुषित मन को प्रस्तुत करने वाली लेखिका को यह संकेत हमारे ही ब्रह्मवैवर्त पुराण में उपलब्ध गर्हित सामग्री से मिला है। न भूलें कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने अभिनेत्री खुशबू के केस में इसी प्रकार की सामग्री के आधार पर श्रीकृष्ण व राधा के सम्बन्धों को Live in relashionship करार दिया था।

वैंडी डोनिगर द्वारा प्रस्तुत रामायण के चरित्रों की बात करें तो संक्षेप में यही कहना होगा कि मूल वाल्मीकि रामायण में ही इतने प्रक्षेप हो चुके हैं कि क्या कहें! रामायण के सभी अध्येता सम्पूर्ण उत्तरकाण्ड को प्रक्षिप्त मानते हैं पर हम हैं कि सीता-त्याग, शम्बूक-वध जैसे प्रक्षेपों को गले से लगा स्वयं ही पतित पावन राम- चरित्र को अपावन कर रहे हैं, विदेशियों की क्या बात करें।

स्थिति यह है कि वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त आज पचासों रामायण उपलब्ध हैं, जिनमें परस्पर विरुद्ध, सृष्टिक्रम से विरुद्ध, असंभव बातें थोक भाव में भरी पड़ी हैं पर हम उनमें घटनाओं से की गयी छेड़छाड़ को नकारने हेतु सन्नद्ध नहीं हैं तो वैंडी को अबकी रोक लिया, परन्तु किस-किस को रोकोगे? वैंडी डोनिगर ने श्री राम-लक्ष्मण के बारे में जो लिखा है उसके संकेत कहाँ हैं देखिए-

जिस लक्ष्मण के बारे में विभीषण का कथन है कि जिसने आहार और निद्रा को १२ वर्ष तक छोड़ दिया हो उस लक्ष्मण के हाथों ही मेघनाथ का वध संभव है, ऐसे दृढ़ संयमी, भ्रातृ-भक्त लक्ष्मण के बारे में जब स्कन्द पुराण में यह वर्णन मिलेगा-

हत्वैनं राघवं सुप्तं सीतां पत्नीं विधाय च।
किं गच्छामि निजं स्थानं विदेशं वापि दूरतः॥ नागर खण्ड अध्याय २०।४५॥ {**देखें- रामकथा- कामिल बुल्के**}

अर्थात् 'लक्ष्मण के मन में राम का वध करके सीता को अपनी पत्नी बनाने का विचार आया।' (यद्यपि उक्त श्लोक की संस्कृत तथा 'विदेश' शब्द-प्रयोग इसके प्रक्षिप्त होने की घोषणा कर रहे हैं) तो द्वेषी लेखक अपनी कलम को क्यों संयमित करेंगे?

अब महावीर, अखण्ड ब्रह्मचारी हनुमान के संदर्भ में देखिये, जिनकी कामुकता की चर्चा भारतीय संस्कृति-द्वेषी लेखकों ने की है।

श्री हनुमान के ब्रह्मचर्य साधना का वर्णन निर्विवाद रूप से वाल्मीकि तथा अन्य रामायणों में मिलता है। इस भाव को यहाँ तक विस्तार दिया गया कि 'भावार्थ रामायण' में यही कल्पना कर ली गयी कि हनुमान कौपीन पहनकर ही जन्मे। परन्तु साथ ही कुछेक रामायणों में श्री हनुमान की

प्रेमलीलाओं का भी वर्णन किया गया है। एक रामायण 'रामकियेन' में स्वयंप्रभा' एक अप्सरा वानरी तथा मन्दोदरी के साथ हनुमान के रमण का वर्णन मिलता है। 'सेरीराम' में तो हनुमान को व्यभिचारी तक बताया है। हनुमान के ब्रह्मचर्य का खण्डन सिर्फ उपरोक्त रामकथा में मिलता हो ऐसा नहीं। पउमचरियं (१६, ४२) में हनुमान की एक सहस्र पत्नियों का उल्लेख है। इसी में एक स्थल पर हनुमान तथा लंका सुन्दरी की प्रेमक्रीड़ा का वर्णन किया गया है। वाल्मीकि रामायण में भी (६, १२५, ४४) भरत ने हनुमान को पत्नीस्वरूप १६ कन्याऐं प्रदान कीं 'शुभाचारा आर्याः कन्यास्तु षोडश,' ऐसा प्रक्षिप्तांश मिलता है।

यह हम इसलिए बल देकर कह सकते हैं क्योंकि इसी वाल्मीकि रामायण में श्री हनुमान के पावन चरित्र को भलीभाँति चित्रित किया गया है। जब माता सीता की खोज में हनुमान रावण के अन्तःपुर में जाते हैं तो वहाँ अर्धनग्न स्त्रियों को भी देखते हैं। पर उनके मन में तनिक भी विकार नहीं आता। सुन्दरकाण्ड सर्ग- ११ में लिखा है-

कामं दृष्टा मया सर्वा विश्वस्ता रावण स्त्रियः।
न तु मे मनसा किंचिद्वैकृत्यमुपपद्यते ॥४१॥

यह है श्री हनुमान का उज्ज्वल चरित्र। परन्तु ऊपर लिखे प्रक्षेपों के कारण भारतीय संस्कृति-द्वेषी तथाकथित इतिहासकार मनमानी कलम क्यों न चलावें? उनका कलुषित मानस जो चाहता है, इन प्रक्षेपों में मिल जाता है।

संस्कृति रक्षा करनी है तो अपने ग्रन्थों में किए गए प्रथम परिवर्तन को दृढ़ता पूर्वक रोकिए

उक्त पुस्तकों में रावण वध लक्ष्मण द्वारा हुआ ऐसा बताया गया है तो उसका स्रोत श्री विमल सूरि द्वारा रचित पउमचरियं है। उसमें में यही कहा है। पर्व (६३)।

जहाँ तक सीता को रावण की पुत्री बताने की बात है, विभिन्न रामायणों में भिन्न-भिन्न बात कही गयी हैं। सीता जनकात्मजा तथा भूमिजा तो बहुश्रुत हैं हीं, सीता रावण की पुत्री भी अनेकत्र बताई गई हैं। यहीं बस नहीं की गई। सीता को रक्त, अग्नि, फल-वृक्षों से उत्पन्न भी कहा है। यही प्रक्षेप उक्त इतिहासकारों के आधार बन गए।

विस्तृत जानकारी हेतु फादर कामिल बुल्के की राम कथा देखें।

हम निवेदन यही करना चाहते हैं कि आदर्श भारतीय चरित्रों पर पुराने प्रक्षेपकर्त्ताओं ने भी कम प्रयोग नही किए हैं इन्हीं ने नये लोगों को कुकृत्य हेतु-साहस दिया।

जो समाज, जो समुदाय, जो राष्ट्र, जो कौम अपने ग्रन्थों को प्राणप्रण से प्रक्षेप से नहीं बचाते निश्चितरूपेण कालान्तर में उन ग्रन्थों की आत्मा को मरने से कोई नहीं रोक सकता। अगर संस्कृति की रक्षा करनी है तो दृढ़ता पूर्वक प्रथम प्रक्षेपकर्त्ता को निरुद्ध करना होगा।

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

□□□

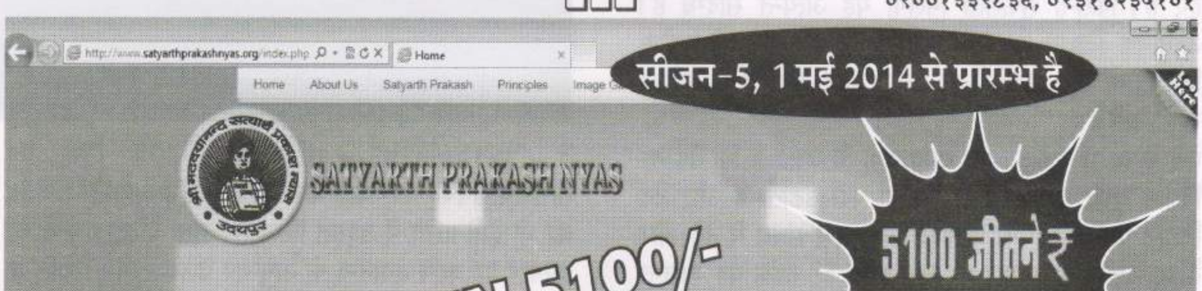

वेद और सृष्टि विज्ञान

डॉ. महावीर मीमांसक

यह २१ वीं सदी विज्ञान की सदी घोषित हो चुकी है। इस शताब्दी में पश्चिमी देशों में विज्ञान की आश्चर्यजनक खोजें हो रही हैं। रोबोट और क्लोन बेबी की रचना तो पुरानी हो चुकी है। सृष्टि रचना की खोज में स्टीफन्स हाकिंग जैसे उद्भट वैज्ञानिक अपनी संपूर्ण वैज्ञानिकों की टीम के साथ सृष्टि के रहस्यों की खोज में दिन रात जुटे रहते हैं। अरबों डालर की राशि इन वैज्ञानिकों को खोज का कार्य सम्पन्न करने के लिए सुलभ प्राप्त है। प्रलयकालीन रहस्य को जानने के लिए १२ अक्टूबर सन् २००८ की घटना समस्त विश्व जानता है जब स्टीफन्स हाकिंग अपने ६००० वैज्ञानिकों के साथ पूरी तैयारी करके जेनेवा में २७ मील लम्बी सुरंग को विस्फोट द्वारा उड़ाने में तत्पर थे। समस्त विश्व अत्यन्त आश्चर्य और विभीषिका के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था कि कब सुरंग फटेगी और प्रलय आ जायेगी। सुरंग में विस्फोट तो हुआ किन्तु प्रलय नहीं आयी। प्रलयकालीन रहस्य को जानने के लिए अरबों डालर के व्यय से तैयार किया गया विज्ञान का समस्त प्रबन्ध और साज सज्जा धूयें में उड़कर रह गया। स्टीफन्स हाकिंग दोबारा यह परीक्षण करने के लिए अपने मिशन में जुटे हुए हैं। कितनी सफलता मिलेगी यह अत्यन्त संदिग्ध है। आधुनिक विज्ञान का सृष्टि उत्पत्ति का सिद्धान्त भी अनेक विसंगतियों और मतभेदों से पंक्चर हुआ पड़ा है। सब कुछ स्पष्ट नहीं है।

ऐसे समय में यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि वेद का विज्ञान सृष्टि के रहस्य से कितना पर्दा उठाता है और वेद विज्ञान के प्रकाण्डवेत्ता ऋषि दयानन्द इस संबंध में वेद और वैदिक दर्शनों के आधार पर क्या कहते हैं? ताकि यह ज्वलन्त समस्या सुलझाने में कुछ सहायता मिले।

ऋषि दयानन्द ने सृष्टि विज्ञान के संबंध में मुख्यतः अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा है, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी इस विषय को लिया है। सृष्टि विज्ञान के संबंध में वेद में विशेष रूप से प्रकाश ऋग्वेद के चार सूक्तों में डाला गया है जो भाववृत्त देवताक प्रसिद्ध हैं। ये ऋग्वेद के १० वें मंडल के १२६,१३०,१५४ और १६० वें सूक्त हैं। ऋषि दयानन्द ने इन्हीं के आधार पर मुख्य रूप से लिखा है।

सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास को प्रारम्भ करते हुए ऋषि दयानन्द विषय देते हुए लिखते हैं:- 'अथ सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति-प्रलय विषयान् व्याख्यास्यामः' और विषय का प्रारम्भ, ऋग्वेद के मं. १० सू. १२६ और मंत्र ७ से करते हैं जो इस सूक्त का अन्तिम मंत्र है। सूक्त का प्रारम्भिक मंत्र **'नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम् ....'** मंत्र और दूसरा मंत्र भी अधिकांशतः नकारात्मक और अभावात्मक प्रलयकालीन स्थिति का वर्णन करने के कारण उद्धृत नहीं किये अपितु तीसरा मंत्र **'तम आसीत्तमसा गूळमग्रे'** प्रलयकालीन स्थिति का सकारात्मक भावात्मक वर्णन करने के कारण उद्धृत किया है। सूक्त के अंतिम मंत्र को प्रारम्भ में देने का कारण है कि ऋषि दयानन्द संपूर्ण सृष्टि का धारण और प्रलयकर्ता आदि वेद के अनुसार ईश्वर को मानते हैं जैसा कि ऋषि ने मंत्र की व्याख्या की है। इसी के प्रमाणस्वरूप ऋषि ने यहाँ यजुर्वेद अ. ३१ मं.

२ **'पुरुषऽएवेदंऽसर्वं......'** मंत्र को भी दिया है। तैत्तिरीयोपनिषद् का **'यतो वाइ मानि भूतानि जायन्ते'** इत्यादि को भी इसी प्रसंग में उद्धृत किया है। अतः वैदिक प्रमाणों के आधार पर ऋषि दयानन्द के अनुसार प्रलयकालीन स्थिति में ईश्वर की सत्ता शाश्वत है और सृष्टि का कर्तव्य भी ईश्वर में ही है।

इस प्रसंग में मीमांसकों और भौतिकवादियों प्रकृतिवादियों द्वारा उठाया गया एक बड़ा रोचक और महत्वपूर्ण प्रसंग है, जिसे देना उपयुक्त लगता है।

जगत् का ईश्वर कर्तृत्व के प्रसंग में प्रश्न उठा कि ईश्वर में यदि जगत् का कर्तृत्व माना जाये तो कर्तृत्व यदि नित्य है तो जगत् का सर्जन निरन्तर होते रहना चाहिए जो नहीं होता और यदि कर्तृत्व नित्य न होकर सामयिक है तो ईश्वर का स्वरूप अनित्य हो जायेगा। अनीश्वरवादी भौतिकवादी भी यही

प्रश्न करते हैं। बड़े लम्बे वाद के कारण बड़ा तात्त्विक समाधान प्रस्तुत किया गया कि प्रकृति के परमाणुओं में निरन्तर सतत प्रक्रिया चलती रहती है, चाहे वह क्रिया संघटनात्मक हो और चाहे विघटनात्मक। प्रकृति के परमाणुओं में उस नित्य निरन्तन क्रिया का कारण ईश्वर का सान्निध्य है जो ईश्वर प्रकृति में व्याप्य-व्यापक भाव से नित्य विद्यमान रहता है। आज के वैज्ञानिकों को प्रकृति के विश्लेषण के समय देखना चाहिए कि प्रकृति की क्रियाओं में कोई तत्त्वान्तर भी कारण है या नहीं? नियमपूर्वक बनना और बिगड़ना स्वतः नहीं हो सकता है जो ईश्वर के कर्त्तृत्व और नियन्तृत्व का ज्ञापक है। स्टीफन्स हाकिंग की पहले कुछ ऐसी ही मान्यता थी। (द्र. Story of Creation) किन्तु अब अपनी पुस्तक 'Grand Design' में वे भौतिक विज्ञान के अनिवार्य नियम के आधार पर सृष्टि को स्वतः रचना मानते हैं। किन्तु भौतिक तत्त्वों में ईश्वर व्याप्ति के बिना यह नियम अधूरा है क्योंकि ऋषि के अनुसार "नियम पूर्वक बनना और बिगड़ना स्वतः नहीं हो सकता।"

ऋषि दयानन्द जगत् में तीन मौलिक नित्य तत्वों का प्रतिपादन वेद और दर्शनों के प्रमाण के आधार पर करते हुए बतलाते हैं कि ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन तत्व नित्य हैं जिसे त्रैतवाद कहा जाता है। सांख्यदर्शन अ.१ सू.६१ का **पंचविंशतिर्गणः** के प्रमाण के अतिरिक्त ऋग्वेद का **'द्वा सुपर्णा...'** और श्वेत.उप. का **'अजामेकां....'** प्रमाण त्रैतवाद के प्रतिपादन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वेदान्त और उपनिषदों के वचनों की ब्रह्म अद्वैतवाद परक व्याख्याओं का ऋषि दयानन्द युक्तियुक्त खण्डन करते हैं। इस प्रसंग में अनेक मनघड़न्त वचनों का जो दर्शनों के नाम पर चलते थे, ऋषि ने भाण्डाफोड़ किया है।

सांख्य और न्यायदर्शन के आधार पर ऋषि आठ अनीश्वरवादी नास्तिकों के मत का सृष्टिरचना के कारण के संदर्भ में खण्डन करते हुए नौवां स्वभाववादी आधुनिक नास्तिक को भी नहीं छोड़ते। ऋषि दयानन्द इस प्रसंग में 'सृष्टि' की परिभाषा अपने शब्दों में देते हैं जो उनकी दर्शनशास्त्र को नवीन देन कही जा सकती है और वह है:-

'नित्यायाः सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थायाः प्रकृतेरुत्पन्नानां परमसूक्ष्माणा पृथक् पृथग्वर्त्तमानानां तत्त्वपरमाणूनां प्रथमः संयोगारम्भः संयोगविशेषादवस्थान्तरस्य स्थूलाकारप्राप्तिः सृष्टिरुच्यते' ऋषि की यह परिभाषा सांख्य दर्शन १.६१ सूत्र की सारात्मक व्याख्या कही जा सकती है। परिभाषा दार्शनिक शब्दावली को दार्शनिक शैली में संजोये हुए है जो प्राच्य न्यायदर्शन के टीकाकार वात्स्यायन और नव्यनैयायिक उदयन को भी मात दे रही है। परिभाषा में **'तत्वपरमाणूनां प्रथमः संयोगारम्भः'** और **'संयोगविशेषादवस्थान्तरय स्थूलाकारप्राप्तिः'** विशेषतः अवधेय है जो आधुनिक विज्ञान को सृष्टि और प्रलय के प्रथम और अन्तिम क्षण के चित्र का दिग्दर्शन करवा सकते हैं। ऋषि दयानन्द सर्वप्रथम आधुनिक दार्शनिक विद्वान् थे जिन्होंने वेदों के अतिरिक्त दर्शन शास्त्रों के मौलिक और वास्तविक अभिप्राय को समझा था। दर्शन शास्त्रों में सृष्टि की प्रक्रिया सम्बन्धी वादों और मान्यताओं को परस्पर विरोधी मानने वाले पूर्ववर्ती विद्वानों का खण्डन करते हुए बतलाया कि दर्शनशास्त्रों में कोई विरोध नहीं है और उनमें समन्वय सिद्ध किया है। दर्शनशास्त्र को ऋषि दयानन्द की यह अद्भुत देन है। सृष्टि प्रक्रिया में **'तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः'** की व्याख्या में ऋषि लिखते हैं कि उस परमेश्वर और प्रकृति से आकाश 'अवकाश' अर्थात् जो कारणरूप द्रव्य सर्वत्र फैल रहा था उसको इकट्ठा करने से आकाश उत्पन्न-सा होता है। ऋषि की यह 'तस्माद्वा एतस्मादात्मनः' की और 'आकाशः सम्भूतः' की व्याख्या सर्वत्र युक्तिपूर्ण और वैज्ञानिक है जो अन्य व्याख्याकारों से हटकर है। सृष्टिसर्जन की प्रक्रिया के इस युक्तियुक्त क्रम में 'अन्नोद्रेतः' में रेतः स्थूल वीर्य के अतिरिक्त आधुनिक बायलोजी का डी.एन.ए. और क्रोमोसोम के भी सेल्स हो सकते हैं, जो वीर्य के ही सूक्ष्म रूप हैं। 'रेतसः पुरुषः' में पुरुष की व्याख्या शरीर के रूप में ऋषि ने पूर्णतः उचित की है। इस प्रसंग में सदानन्द आचार्य का वेदान्त का पंचीकरण का सिद्धान्त निरर्थक है क्योंकि प्रत्येक भूत अपने आप में स्वतंत्र सत्ता रखता है कोई मिश्रित रूप नहीं है। कीट पतंग पशु पक्षियों की उत्पत्ति के पश्चात् मनुष्य की उत्पत्ति सृष्टि की अंतिम रचना है। अमैथुनी, सृष्टि की पुष्टि आज के वैज्ञानिक आविष्कार 'क्लोन बेबी' और 'नली के प्रजनन' ने कर दी है।

सृष्टि के आदिकाल के भूगोल और इतिहास की तथ्यात्मक जानकारी देने के बाद ऋषि ने कुछ वैज्ञानिक तथ्यों का रहस्योद्घाटन किया है जिनकी आज पुष्टि हो चुकी है। जगत् की उत्पत्ति में कितना काल लगा, ऋषि ने दिया है जो प्राचीन ज्योतिष्शास्त्र और दर्शनशास्त्रों के आधार पर है जिसका पूरा अतापता और गणित देने के लिए अलग से संशोधन लिखना पड़ेगा। किन्तु उतने सर्जनकाल की पुष्टि आधुनिक सृष्टि वैज्ञानिकों द्वारा हो चुकी है। स्टीफन्स हाकिंग भी द्रष्टव्य हैं।

पृथ्वी को धारण करने वाले शेष और सत्य की सही व्याख्या के अतिरिक्त **'उक्षादाधार पृथ्वीम्'** -ऋग्वेद में उक्षा द्वारा पृथ्वी के धारण में उक्षा का अर्थ सूर्य पृथिवी को धारण करता है कितना वैज्ञानिक तथ्य है। पृथ्वी आदि लोकों, ग्रहों का सूर्य के चारों तरफ आकाश में भ्रमण यजुर्वेद के **'आयं गौः पृश्निवरक्रमीत्'** के आधार पर बताना कितना आर्ष प्रमाण है। सूर्य का भ्रमण भी **'हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्'**- यजुर्वेद के आधार पर घोषित करना आर्ष दर्शन का ही चमत्कार है जो पूर्णतः वैज्ञानिक है। सभी ग्रहों उपग्रहों का सूर्य द्वारा प्रकाशित होना भी **'दिविसोमो अधिश्रितः'**- अथर्व वेद की वैज्ञानिकता का प्रमाण है। ब्रह्माण्ड में अनेक सूर्यों के होने की घोषणा भी ऋषि के आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व की, वैज्ञानिक दृष्टि का प्रमाण है। दूसरे लोकों में मनुष्य आदि जीवन के होने की भविष्यवाणी शतपथ के **'एते हीदं सर्वं वासयन्ते'** के आधार पर करना आज के वैज्ञानिकों के लिए पथ प्रदर्शक है जिन्होंने अभी चन्द्रमा पर पानी की खोज करके माना कि वहाँ जीवन संभव है तथा हिन्दुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार नासा द्वारा चन्द्रमा पर एक महिला की आकृति का दर्शन वेदादिशास्त्रों की प्रामाणिकता की पुष्टि है। अन्य लोकों में मनुष्यों की आकृतियों में स्थानभेद से कुछ-कुछ भेद होना, किन्तु शारीरिक अवयवों के संस्थान वैसे ही एक हैं जैसे होने की ऋषि की बात की पुष्टि भविष्य विज्ञान का विषय है। सभी लोक लोकान्तरों में वेदों का प्रकाश और वेदों की एक जैसी भाषा भी भावी वैज्ञानिकों की खोज का विषय है। स्टीफन्स हॉकिंग आधुनिक सृष्टि विज्ञानवेत्ता द्वारा दूसरे लोकों में भूमि की भाँति डी.एन.ए. (शरीर रचना का मूल बीज) होने की घोषणा ऋषि के वचनों को सत्य सिद्ध करने का आधारभूत कदम (पग) है जो अभी खोजा जाना है।

यहाँ एक बात विद्वानों के विचारार्थ में अवश्य प्रस्तुत करना चाहूँगा। सृष्टि के प्रथम दिन चार ऋषि वेद के ज्ञान विज्ञान के साथ पैदा हुए वे वेद की भाषा को बोलते और जानते थे। शेष समूची जनता जो लाखों करोड़ों की संख्या में होगी, न वैदिक ज्ञान से और न ही वैदिक या अन्य भाषा के ज्ञान से युक्त थी। अब ये चार ऋषि कितने मनुष्यों को कितने समय में वैदिक ज्ञान और भाषा सिखा सकते थे? ऐसे में चार ऋषि भी एकदम न मकान बना सकते थे, न खाना पका सकते थे, न वस्त्र बनाकर पहन सकते थे और न ही जीवन में अन्य उपयोगी वस्तुएँ एकदम तैयार कर सकते थे। क्योंकि उन्हें बनाने और तैयार करने की उपादान सामग्री और साधन मौजूद नहीं थे। ऐसी दशा में कुछ काल तक, वह भी अच्छे लम्बे काल तक, अधिकतर मानव समाज नंगा ही रहा होगा। कच्चे फल आदि ही खाता रहा होगा, बिना घर बार के खुले मैदानों में या कहीं गुफा आदि की शरण लेता रहा होगा, बिना भाषा के रोना हँसना आदि स्वाभाविक अभिव्यक्तियों को छोड़कर कुछ संकेतों में ही भावाभिव्यक्त करता रहा होगा। यह वैदिक विकासवाद कहा जा सकता है जो कुछ अंशों में आधुनिक विकासवाद से मेल खाता हुआ भी मौलिक रूप से इससे सर्वथा भिन्न है। वानर से मानव का विकास मानने वाले डार्विन के सिद्धान्त से तो सर्वथा भिन्न है।

प्रलयकालीन स्थिति के रहस्यों का उद्घाटन करने वाले ऋग्वेद में चार भाववृत्त सूक्तों में बड़ा विज्ञान भरा हुआ है। **'आनीदवातं स्वधया तदेकं, तुच्छेयेनाभ्वपिहितं यदासीत्, तपस्तन्महिना जायतैकम्, कामस्तदग्ने समवर्तताधि रेतोधा आसन् महिमान आसन्'** इत्यादि ऋग्वेद के मं. १० सू. १२६ के मंत्रों में सूक्ष्म रूप में सांख्य दर्शन की प्राणिकी जैविकी और वैशेषिक दर्शन की भौतिकी में सृष्टि और प्रलय का विज्ञान भरा पड़ा है। इन मंत्रों में प्रयुक्त वैज्ञानिक शब्दावली का अर्थ खोजने की महती आवश्यकता है जिससे आधुनिक विज्ञान को अपनी खोज में सहयोग मिले और वेद के ज्ञान विज्ञान की ख्याति विश्व में प्रसिद्ध हो। यह कार्य व्यक्तिगत विद्वानों के अतिरिक्त संस्थाओं तथा ऋषि की उत्तराधिकारिणी सभा को करना चाहिए।

-वैदिक शोध सदन
फ्लैट नं. २४१, C.A अपार्टमेन्ट
पश्चिम विहार, नई दिल्ली ११००६३

□□□

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

क्या होगा कानून बनाकर ?

क्या होगा कानून बनाकर, पालन करने वाला कौन ?
अन्धी है कानून व्यवस्था और प्रक्रिया बहरी मौन।
कहते हैं आजादी आयी और सभी आजाद हो गये,
इस आजादी के सब मतलब लगे लगाने नये-नये।
अन्धी आंधी नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाला कौन ?
क्या होगा कानून बनाकर,
पालन करने वाला कौन ?
सत्ता के ठेकेदारों के, कैसे कृत्य घिनौने हैं,
इनको तो कानून कायदे लगते सिर्फ खिलौने हैं।
स्वेच्छाचारी मुस्टण्डों को मुश्क लगाने वाला कौन ?
क्या होगा कानून बनाकर, पालन करने वाला कौन ?
कलम हो गयी स्वेच्छाचारी और दण्ड लाचार है,

सामाजिक सद्भाव बन गया कोठे का व्यापार है।
इन सौदाबाजों की हरकत बन्द कराने वाला कौन ?
क्या होगा कानून बनाकर, पालन करने वाला कौन ?
कुम्भकर्ण शासक, अनुयायी दुःशासन बन बैठे हैं,
प्रजातंत्र के रक्षक ही जब भक्षक बनकर ऐंठे हैं।
ऐसी भ्रष्ट लिजलिजी सत्ता, पाठ पढ़ाने वाला कौन ?
क्या होगा कानून बनाकर, पालन करने वाला कौन ?
क्या दिल्ली क्या राज्य हालात एक से हैं,
कुर्सी के खातिर जगी शह मात एक से हैं।
बहरी, गूंगी, भ्रष्ट-व्यवस्था, चूल हिलाने वाला कौन ?
क्या होगा कानून बनाकर, पालन करने वाला कौन ?

- डॉ. मोहन तिवारी 'आनन्द'

सत्यार्थप्रकाश पहेली-७

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

	१	र्ण	■	■	■	२	त्मा	■	३ य	
■	च	४	■	५ हो		■	६ पि		६	ह
७	न्धु	■	८	ता	■	■	ग	९	९ त्मा	

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो प्रकृत्यादि दिव्य पदार्थों में व्याप्त है इससे उस ईश्वर का नाम दिव्य है। जिसके उत्तम पालन और पूर्ण कर्म हैं, इससे उस ईश्वर का नाम है।
२. जो सब जीवादि जगत् में निरन्तर व्यापक हो रहा है। इससे उस ईश्वर का नाम है।
३. जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता है और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषिमुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम है, क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है।
४. जो आनन्दस्वरूप और सबको आनन्द देने वाला है, इसलिये ईश्वर का नाम है।
५. जो जीवों को देने योग्य पदार्थों का दाता और ग्रहण करने योग्यों का ग्राहक है, इससे उस ईश्वर का नाम है।
६. जो पिताओं का भी पिता है, इससे उस परमेश्वर का नाम है।
७. जिसने अपने में सब लोकलोकान्तरों को नियमों से बद्ध कर रक्खे और सहोदर के समान सहायक है। इसी से अपनी-अपनी परिधि वा नियम का उल्लंघन नहीं कर सकते, जैसे भ्राता भाइयों का सहायकारी होता है, वैसे परमेश्वर भी पृथिव्यादि लोकों के धारण, रक्षण और सुख देने से संज्ञक है।
८. जैसे पूर्णकृपायुक्त जननी अपने सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है, वैसे परमेश्वर भी सब जीवों की बढ़ती चाहता है, इससे परमेश्वर का नाम है।
९. जिसका आत्मा अर्थात् स्वरूप महान् है, जो वायु के समान अनन्त बलवान् है। इससे उस ईश्वर का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१४

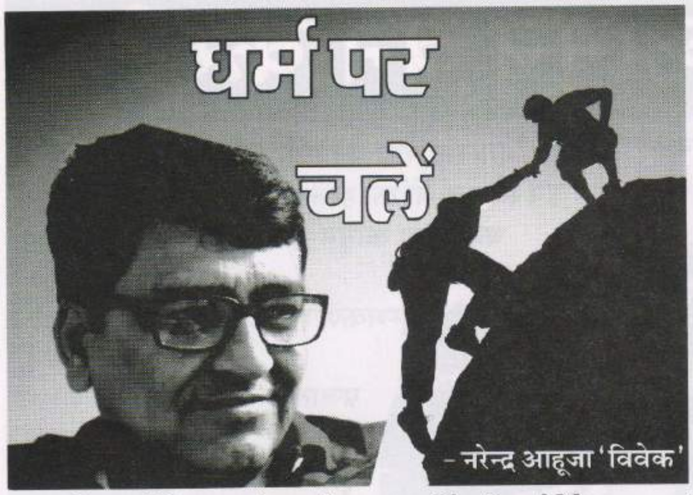

आज के इस भौतिकतावादी युग में मनुष्य धार्मिक दिखाई देने के लिए मन्दिरों, तीर्थ स्थानों, तथाकथित धर्म गुरुओं के डेरों पर जाने, प्रवचन कीर्तन सुनने जैसे कार्य अधिकता में करने लगा है। वैसे भी कथावाचकों के प्रवचनों में हजारों लाखों की भीड़ देखकर एकबारगी ऐसा लगता है जैसे इस देश में सभी धर्म पर चलने वाले धार्मिक हो गए हैं और हमारा यह देश भारत विश्व का आध्यात्मिक सिरमौर होने का गौरव पुनः प्राप्त कर रहा है।

लेकिन जब हम अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो इस सबके बावजूद चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्या, भ्रष्टाचार, गरीबी, अनैतिकता समाज में बहुत अधिक बढ़ गई है। जब समाज में इतना ज्यादा अनाचार बढ़ रहा है तो फिर कथावाचकों के पंडालों में हजारों लाखों की भीड़ क्या दर्शाती है? प्रवचन सुनकर स्वयं को धन्य समझने वाले लोग क्या धर्म के मार्ग पर नहीं चल रहे? आखिर धर्म का मार्ग क्या है जिस पर चलने का आदेश वेद भगवान ने ऋग्वेद ३/१७/५ द्वारा दिया। वेद में स्पष्ट कहा कि हम सभी धर्म का आचरण करें। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि आखिर धर्म क्या है जिस पर आचरण करने का आदेश वेद भगवान ने मानव मात्र को दिया। योगेश्वर कृष्ण विषाद में फँसकर पलायन की स्थिति में आ चुके अर्जुन को महाभारत युद्ध से पूर्व गीता का संदेश देकर कर्तव्य कर्म करने के लिए प्रेरित करते हुए कर्तव्य कर्म के पालन को ही धर्म बतलाते हैं। और निष्काम (बिना कामना) किए गए यज्ञीय अर्थात् परोपकार के कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्म की श्रेणी में रखते हैं। वैशेषिक दर्शन के अनुसार भी जिन नियमों का पालन करने से लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति हो, उन्हीं का नाम धर्म है और निश्चित रूप से परोपकार के यज्ञीय कार्य सर्वश्रेष्ठ कर्म की श्रेणी में आते हैं और न्यायकर्ता प्रभु अपनी न्याय व्यवस्था के आधीन ऐसे परोपकार के कार्यों के लिए मनुष्य को अच्छी नियति, भाग्य वा प्रारब्ध प्रदान करते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि यज्ञीय परोपकार के कार्य करने से मनुष्य की लौकिक एवं पारलौकिक प्रगति होती है। अतः परोपकार के कार्य करना हम सभी का धर्म है ।

धर्म का एक अर्थ धारण करने वाला भी होता है। दार्शनिकों के अनुसार जिस गुण विशेष से उस पदार्थ की सत्ता का ज्ञान हो वही उसका धर्म होता है। उदाहरण के लिए अग्नि की सत्ता का बोध उसके गुण उष्णता (जलाने की शक्ति) से होता है अर्थात् अग्नि का धर्म है उष्णता। अब यदि अग्नि अपने धर्म उष्णता को छोड़ दे अर्थात् ठंडी पड़ जाए तो वह अपना स्वरूप खोकर राख में परिवर्तित हो जायेगी। मनुस्मृति में भी कहा गया है-

'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।'

अर्थात् जो धर्म को मार देते हैं, धर्माचरण छोड़ देते हैं, धर्म उन्हें नष्ट कर देता है और जो धर्म की रक्षा करते हैं धर्म उनकी रक्षा करता है। वैसे भी जिस गुण से पदार्थ की सत्ता का बोध हो वही उसका धर्म होता है अब यदि उस पदार्थ ने उसी गुण विशेष का त्याग कर दिया तो उसकी सत्ता व स्वरूप स्वतः नष्ट हो गई।

मनुष्य का धर्म है मनुष्यता और यदि मनुष्य अपने इसी मनुष्यता के गुण का त्याग कर दे तो वह इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में पशुओं के समान हो जायेगा। अर्थात् जब मनुष्य ने अपने धर्म मनुष्यता को मार दिया तो धर्म ने उसे मार दिया। वह **'मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति'** मनुष्य के रूप में पशु समान हो गया ।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि मनुष्य का धर्म मनुष्यता है क्या?**इसके लिए क्रान्तिदर्शी देव दयानन्द ने 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में मनुष्य को परिभाषित करते हुए लिखा 'मननशील विचारवान् सभी से स्वात्मवत् यथायोग्य व्यवहार करके निर्बल धर्मात्माओं को संरक्षण दुष्टों को दंड देता हुआ सत्याचरण करता हुआ परोपकार के कार्य किया करे।'** अब हम स्वयं विचार कर लें कि हम सभी मनुष्य के रूप में अपने धर्म मनुष्यता का कितना पालन कर रहे हैं। तथाकथित धर्मगुरुओं कथावाचकों मन्दिरों आदि में निरन्तर बढ़ती भीड़ बढ़ती धार्मिकता या धर्म आचरण का प्रतीक नहीं है।

५०२ जी एच २७ सैक्टर २० पंचकूला
चलभाष- ०९४६७६०८६८६

□□□

बृहत्तर भारत कर्तारम् श्री कृष्ण वन्दामहे

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पाँच सहस्र वर्षों से भी पुरानी बात है। द्वापर युग का अन्त और कलियुग का आरम्भ होने वाला था। मेगस्थनीज के यात्रा के विवरणों के आधार पर आज २०७१ वि., २०१४ ई. में ५०८६ वर्षों की पूर्व की बात है। भारतीय इतिहास की गणना में भगवान श्रीकृष्ण का काल ५१५२ वर्ष के लगभग प्राचीन है। श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के पश्चात् महाभारत युद्ध के पश्चात् ३६ वर्ष जीवित रहे थे। भारतवर्ष के इतिहास की दृष्टि से यह द्वापर और कलियुग का सन्धिकाल ऐसा कालखण्ड है जब भारत वसुन्धरा पर प्रतिकूलता और विपत्ति की काली घटाएँ घुमड़-घुमड़ कर घिरती चली आ रही थीं। कहने को तो जरासन्ध मगध में सम्राट् था और अन्य सब माण्डलिक राजा थे किन्तु वास्तव में संपूर्ण भारत देश खण्ड-विखण्ड होकर राष्ट्रीय दृष्टि से आत्मघाती मार्ग पर बढ़ता चला जा रहा था। सम्राट् जरासन्ध इतना अन्यायी था कि उसने ८३ आंचलिक राजाओं को गिरिव्रज के कारागार में बन्दी बना रखा था और एक सौ की संख्या पूरी होने पर उन्हें महादेव की बलि चढ़ा देने की योजना बना रहा था।

इधर हस्तिनापुर में भीष्म जैसे अजेय बाल ब्रह्मचारी और द्रोण जैसे शस्त्रास्त्रों के दिग्गज आचार्य थे, किन्तु राष्ट्रीयता की दृष्टि से सब बेकार। अन्धे धृतराष्ट्र की राज्यलिप्सा, कौरव-पाण्डव का कुलघाती संघर्ष इतना भारी पड़ रहा था कि इन सबके न कोई उच्च राष्ट्रीय आदर्श, न राष्ट्रनीति, न अन्याय का विरोध, कुछ भी न रह गया था। इनकी नाक के नीचे ही इन्हीं के संबंधी, कुन्ती के मातृपक्ष में, कंस मथुरा में अपने पिता उग्रसेन से यदुवंशियों का राज्य छीनकर उनको कारागार में बन्दी बनाकर स्वयं राजा बन बैठा था और इनके नजदीकी संबंधी हस्तिनापुर वालों के भीष्म, द्रोण, धृतराष्ट्र के कान में जूं तक न रेंगी। यह था नैतिकता और राष्ट्रीयता के पतन का एक ज्वलन्त उदाहरण। कहने को यदुवंशियों के १८ कुल थे और १८ हजार यदुवंशी थे किन्तु सब कंस से डरते थे क्योंकि कंस सम्राट् जरासन्ध का दामाद था। जरासन्ध की दो पुत्रियाँ, अस्ति और प्राप्ति कंस को ब्याही थीं। अतः कंस को अपने श्वसुर जरासन्ध का संरक्षण प्राप्त था।

संपूर्ण भारत का राष्ट्रीय परिदृश्य आंचलिक राज्यों में परस्पर संघर्षरत् था। पश्चिम में मद्र, ईरान में शल्य, गांधार अफगानिस्तान में शकुनि, सौवीर सिन्ध में जयद्रथ, हस्तिनापुर में कौरव पाण्डवों का गृह युद्ध, मथुरा में कंस, इधर पूर्व प्राग्ज्योतिषपुर में नरकासुर, भगदत्त, मगध में जरासन्ध, संपूर्ण, देश अन्याय, अत्याचार, पारस्परिक विद्रोह विग्रह में कराह रहा था। धर्म की ग्लानि हो रही थी और अधर्म बढ़ता जा रहा था। इसी समय भारत वसुन्धरा का राष्ट्रीय उद्धार करने के लिए श्रीकृष्ण चन्द्रोदय हुआ। लोकनायक श्रीकृष्ण ने अपने जीवन के उद्देश्य की घोषणा कर दी-

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।। - गीता ४-८

अर्थात् श्रीकृष्ण के जन्म और जीवन का उद्देश्य अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना तथा दुष्टों का दमन और सज्जनों, साधु-सन्तों की रक्षा करना था। भाद्रपद की कृष्ण अष्टमी को आनन्दकन्द देवकीनन्दन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। श्रीकृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम धीरे-धीरे बड़े होने लगे और मल्लयुद्ध में प्रवीण होने लगे। यदुवंशी १८ कुलों में १८ हजार थे और वे कंस को हटाकर उग्रसेन को यादव संघ का राजा बनाना चाहते थे किन्तु सम्राट् जरासन्ध के संरक्षण में रहने के कारण जरासन्ध के जमाता कंस को युद्ध में हराना असंभव था। अतः श्रीकृष्ण ने द्वन्द्वयुद्ध में कंस को मार डालने की योजना बनायी। श्रीकृष्ण और बलराम की मल्ल विद्या का यश चारों ओर फैलने लगा। कंस श्रीकृष्ण और बलराम को मल्ल युद्ध में मरवा डालना चाहता था। कंस के दो दरबारी मल्ल योद्धा थे मुष्टिक

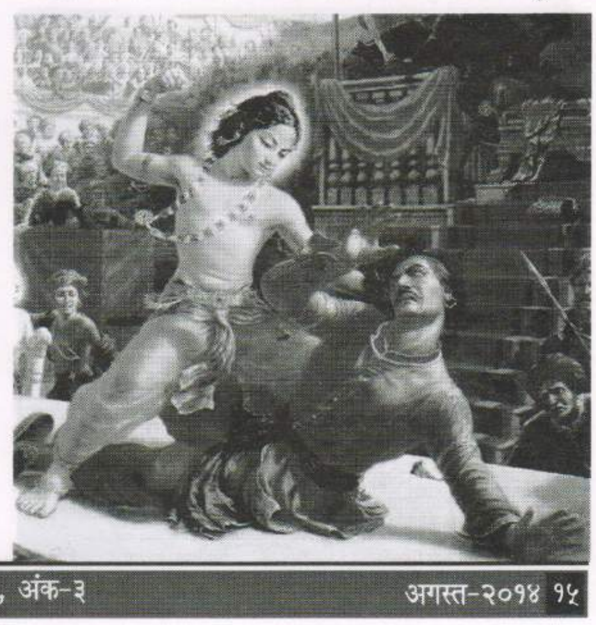

और चारुण। कंस ने इन्हें नियुक्त किया कि वे दोनों मल्लयुद्ध में श्रीकृष्ण और बलराम को मार डालें। कंस के दरबार में मल्लयुद्ध का आयोजन हुआ। कृष्ण ने चारूण और बलराम ने मुष्टिक को पराजित करके जान से मार डाला। यह देखकर कंस घबरा गया और अखाड़े से भागने लगा। श्रीकृष्ण ने कंस को धर दबोचा और कंस के भाई सुनामा को बलराम ने आसानी से मार डाला। इधर सम्राट् जरासन्ध की दोनों पुत्रियाँ विधवा हो गईं और जरासन्ध का क्रोध यदुवंशियों पर बहुत बढ़ गया और वह मथुरा में यादव संघ को नष्ट करने के लिए आक्रमण करने लगा। बाधित होकर यदुवंशी मथुरा छोड़कर पश्चिम समुद्र के किनारे द्वारका में बस गए। श्रीकृष्ण और बलराम के सामने अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह का प्रश्न था। दोनों ही अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अवन्तिपुरी में सान्दीपनि ऋषि के गुरुकुल में गये-

अहोरात्रैश्चतुः षष्ट्या तदद्भुतमभूद् द्विजः।
अस्त्र ग्राममशेषंच प्रोक्तमात्रमवाप्य तौ।। - वि.पु.

भावार्थ यह हुआ कि दोनों भाई कृष्ण और बलराम अवन्तिकापुरी में सान्दीपनि आचार्य के पास अस्त्र-शस्त्र सीखने, प्राप्त करने के उद्देश्य से गए। वहाँ से ६४ रात्रि दिन परिश्रम करके अद्भुत रूप से संपूर्ण अस्त्र-शस्त्रों को प्राप्त करने में सफल हुए।

भारतवर्ष का सम्राट् जरासन्ध था और बिना जरासन्ध का वध किए बृहत्तर भारत संघ की स्थापना नहीं हो सकती थी। जरासन्ध के साथ ही दुष्ट अन्यायी राजाओं का एक धड़ा बन गया था। मथुरा में कंस, मगध में जरासंध, असम में नरकासुर, हस्तिनापुर में दुर्योधन, सिन्ध में जयद्रथ, मद्र (ईरान) में शिशुपाल सभी आंचलिक राजा थे। इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर को माध्यम बनाकर श्रीकृष्ण बृहत्तर भारत, विशाल

भारत को एक संघ राज्य बनाने का सपना देख रहे थे। इस भारत महासंघ के निर्माण में सबसे बड़ी बाधा सम्राट् जरासन्ध ही था। उसको सेना की लड़ाई में पराजित करना असंभव था। श्रीकृष्ण ने कंस को द्वन्द्वयुद्ध में मारा था। यह श्रीकृष्ण की सुपरीक्षित नीति थी।

श्रीकृष्ण ने भीम और अर्जुन को साथ लेकर जरासन्ध की राजधानी गिरिव्रज की यात्रा की। तीनों स्नातक के वेश में वहाँ जा पहुँचे। श्रीकृष्ण ने परिचय दिया कि हम तीनों स्नातक हैं और इन दोनों का मौनव्रत है। आज आधी रात ये मौन व्रत तोड़ेंगे, उसी समय हम आपसे वार्तालाप करेंगे। सम्राट जरासन्ध ने अतिथियों को यज्ञशाला में ठहरा दिया। रात बारह बजे जब जरासन्ध उनसे मिलने आया तो श्रीकृष्ण ने तीनों का परिचय दिया और जरासन्ध को द्वन्द्वयुद्ध के लिए ललकारा। जरासन्ध ने भीम से मल्ल युद्ध स्वीकार कर लिया। वह कृष्ण और अर्जुन को अपनी जोड़ में हीन समझता था। अगले दिन कार्तिक प्रतिपदा को दोनों का मल्लयुद्ध हुआ। तेरह दिन लगातार कुश्ती होती रही । चतुर्दशी को जरासंध और शिथिल होने लगा। कृष्ण ने भीम को प्रोत्साहित किया और भीम ने जरासंध को पटककर उसकी टांगे फाड़ दीं। जरासन्ध मारा गया। श्रीकृष्ण की नीतिमत्ता थी कि बिना किसी रक्तपात के मगध का साम्राज्य सेना कोष सब युधिष्ठिर के आधीन हो गए। कृष्ण ने बन्दी ८६ राजाओं को स्वतंत्र कर दिया और मगध के सिंहासन पर जरासन्ध के पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक कर दिया और इस तरह मगध भी कृष्ण युधिष्ठिर के अनुकूल हो गया।

महाभारत युद्ध के सफल नेता श्रीकृष्ण- महाभारत का युद्ध कहने को तो कौरव पाण्डवों का गृहयुद्ध था किन्तु वास्तव में यह भारतखण्ड के भाग्य का निर्णायक युद्ध था। कौरव का पक्ष भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि के कारण बड़ा प्रबल दुर्जेय था। श्रीकृष्ण को संपूर्ण परिदृश्य से हटा देने पर पाण्डव पक्ष अन्धकार में डूब जाता है। श्रीकृष्ण न होते तो भीष्म की शैय्या, द्रोण-जयद्रथ-कर्ण दुर्योधन का वध का क्या रूप बनता? श्रीकृष्ण ने पाण्डवों की रक्षा की, शत्रुओं का वध करवाया। युधिष्ठिर सिंहासनारूढ़ हुए। अश्वमेध यज्ञ हुआ। सैंकड़ों राज घराने एक सम्राट के अन्दर आ गए। खण्ड-खण्ड विभक्त भारत महाभारत बन गया। यह सब श्रीकृष्ण के नेतृत्व में हुआ। काबुल गान्धार से असम तक संपूर्ण भारत एक राष्ट्र महाभारत बना। यह सब श्रीकृष्ण की ही सूझ-बूझ थी।

राजनीतिक दृष्टि से- राजनीति विज्ञान की दृष्टि से श्रीकृष्ण का महाभारत निर्माण या युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ केवल सम्राट् बनने की घोषणा मात्र था। श्रीकृष्ण ने एक सम्राट् के झण्डे के नीचे एक संघ शासन की स्थापना कर डाली थी। श्रीकृष्ण स्वयं राजा न थे। किन्तु राजा निर्माता अवश्य थे।

उग्रसेन को कंस वध के पश्चात् राजा इन्होंने बनाया था। जरासन्ध की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र सहदेव को मगध का राजा इन्होंने बनाया था। युधिष्ठिर का राज भी तो इन्हीं का निर्माण था। युधिष्ठिर ने अश्वमेघ यज्ञ किया, वे सम्राट् भी हुए किन्तु श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के साम्राज्य को संघीय स्वरूप दिया। युधिष्ठिर के साम्राज्य का प्रत्येक राज्य अपनी आन्तरिक राजनीति, परम्परा व्यवस्था, आर्थिक विकास, शिक्षा सभ्यता, रहन-सहन में पूर्ण स्वतंत्र था। यह प्रत्येक राज्य की आंचलिक स्वायत्तता के साथ संपूर्ण भारत वर्ष को एक राष्ट्र में आबद्ध कर महाभारत बनाने की योजना श्रीकृष्ण का राजनीतिक उद्देश्य था। यह उनका महाभारत बनाने का नेतृत्व था।

श्रीकृष्ण चरित्र की अल्पज्ञात घटना- सामान्य रूप से श्रीकृष्ण वेद, वेदांग, विज्ञान आदि के विद्वान् अप्रतिम योद्धा थे। श्रीकृष्ण अद्‌भुत, सदाचारी, ब्रह्मचारी, तपस्वी महापुरुष थे। अपने पुत्र प्रद्युम्न के जन्म के संबंध में एक रहस्य का उद्‌घाटन श्रीकृष्ण ने स्वयं ही सौप्तिक पर्व में किया है-

ब्रह्मचर्य महद् घोरं चीर्त्वा द्वादश वार्षिकम्।
हिमवत् पार्श्वमभ्येत्य योऽमया तपसार्जित:।।
समान व्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योन्वजायत।
सनत्कुमार तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुत:।। - अ. १२/३०-३१

इन श्लोकों का भाव यह है कि श्रीकृष्ण ने अपनी पत्नी रुक्मिणी के साथ हिमालय की तराई में १२ वर्षों का महान् घोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तपस्या की और रुक्मिणी ने भी समान रूप से व्रत के अनुष्ठान के साथ तपस्या की। फिर दोनों ने सनत् कुमार जैसा तेजस्वी प्रद्युम्न नामक पुत्र उत्पन्न किया। ऐसे चरित्रवान् योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र में रासलीला का प्रसंग पुराणयुग के रसिक कथाकारों की रसिक कल्पना मात्र है। श्रीकृष्ण का योगेश्वर योद्धा चक्र सुदर्शनधारी आदि स्वरूप का निदर्शन महाभारत में मिलता है। श्रीकृष्ण के जीवन से अधिक उनके गीता गायक स्वरूप ने संसार को प्रभावित किया है। श्रीमद्‌भागवत् गीता में श्रीकृष्ण के योग, ज्ञान, कर्म और भक्ति के उपदेशों का बहुत सुन्दर वर्णन है। श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का योगेश्वर स्वरूप बड़ा मनमोहक है। संजय ने गीता के अन्तिम श्लोक में बहुत सुन्दर कहा है-

यत्र योगश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। - गीता- १८-७८

जहाँ जिस पक्ष में योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं, जिस पक्ष में धनुर्धर अर्जुन हैं, उसी पक्ष में श्री, विजय, भूति और ध्रुवनीति है, यही मेरी सम्मति है।

जन्माष्टमी पर हम योगेश्वर श्रीकृष्ण की वन्दना करते हैं।

ईशावास्यम्
पी- ३०, कालिन्दी हाउसिंग स्कीम
कोलकाता ७०००८९

□□□

रक्षा बन्धन

देखो कितनी आज दुकानें यहाँ सजी हैं राखी में,
भाई-बहन के प्यार की सौगात बसी है राखी में।
प्यार की डोर में बाँधे सबको ये त्यौहार निराला है,
चारों तरफ सुखद शान्ति आज हँसी है राखी में।
बचपन साथ गुजारा था, बड़े हुए तो अलग हुए,
फिर भी बहिन से मिलने की आस बसी है राखी में।
सूनी किसी कलाई पर जब बहिन का प्यार उमड़ता है,
ना कोई धर्म का चक्कर और ना जात फँसी है राखी में।
कैसे होते रिश्ते नाते ये त्यौहार बताता है,
भाई का वादा और बहिन की लाज बसी है राखी में।
आओ मेरे भारत के प्यारों मिल प्यौहार मनाएँ हम,
हिन्दू की पूजा, मुस्लिम की नमाज बसी है राखी में।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

यश बढ़ाती है सफलता,
स्वप्न होते हैं साकार।
जब सत्कर्म हों सहयोगी,
मार्गदर्शक हों सद्‌विचार॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएं-
- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०
३५०० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

१५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

संपूर्ण आजादी का उद्घोष

– देवदत्त शर्मा दाधीच 'छोटी खाटूवाले'

भारत भू पर देशभक्ति की, कैसी अलख जगाई है।
भारत माँ के बेटे तुमको आज सौ–सौ बार बधाई है।।

१५ अगस्त के इस राष्ट्रीय पर्व पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ, बधाई। इस दिन १५ अगस्त १९४७ को भारत गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हुआ। इस आजादी के लिए भारत माँ के अनेक सपूतों ने अपने बलिदान किये, कष्ट सहे। भारतवर्ष का इतिहास लाखों वर्ष पुराना है। जहाँ राम, कृष्ण, विवेकानन्द, गाँधी, नेहरू, पटेल, भगतसिंह, झाँसी की रानी आदि अनेक लोगों ने जन्म लिया और भारतीय संस्कृति की अमिट छाप को सुरक्षित रखा। जीओ और जीने दो, अहिंसा परमो धर्म, मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, अतिथि देवो भवः, सर्वे भवन्तु सुखिनः, अहिंसा परमो धर्म, एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्तों को जीवन में बनाये रखा। हमने अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसात्मक लड़ाई लड़कर देश को आजाद कराया।

१५ अगस्त का दिन हम सभी भारतवासियों के लिए बड़ा पावन दिन है। भारत अपने विशाल चिन्तन से अंतरिक्ष को नापने के लिए तैयार हो गया है। आज भी राजनैतिक व्यवस्था भारत राष्ट्र के सूर्य को राहु की तरह ग्रसित किए है। भ्रष्टाचार, व्यक्तिवाद, अवसरवाद, जातिवाद, भाषावाद, राज्यवाद, अल्पसंख्यकवाद, आरक्षणवाद, वोट बैंक का राजनैतिक तथा अपराधीकरण ऐसे अनेक वाद हैं, जो राजनीति के अंग बन गए हैं। आज इस राष्ट्र में भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात करने वालों को सम्मानित किया जा रहा है और राष्ट्रीयता के विचार रखने वालों को साम्प्रदायिक बताते हैं। ६७ वर्ष पहले हम स्वतंत्र तो हो गए हैं लेकिन आज भी भारत की आत्मा बन्धन में है। १५ अगस्त १९४७ को मात्र सत्ता का स्थानान्तर हुआ चेहरे बदले, चरित्र नहीं बदला।

जब राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव पर प्रबल प्रहार हुए।
तब देव शक्तियाँ जाग उठीं, छिड़ गए समर संहार हुए।।

हमारे देश की युगों युगों से परिपाटी रही है कि हमने मातृभूमि की रक्षा के लिए तन-मन-धन न्यौछावर किए हैं लेकिन झुके नहीं। हमारे इन राष्ट्र पुरुषों का जीवन त्याग, बलिदान एवं लोकहित की साधना में समर्पित रहा है। अपने देश की रक्षा के लिए सब कुछ दिया।

युगों युगों से यही हमारी बनी हुई है परिपाटी।
खून दिया मगर नहीं दी, कभी देश की माटी।।

भारत के राष्ट्रीय गीतों में आजादी के लिए उत्साहित किया गया था। सरफरोशी की तमन्ना, मेरा रंग दे बसंती चोला, सारे जहाँ से अच्छा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा। आज के इस पावन पवित्र दिन पर हम सभी भारतवासी प्रतिज्ञा करेंगे कि हमारा देश विश्व में पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन हो हम सभी एक हैं। हम सबको आज जो भी समस्याएँ हैं उनका मिलकर मुकाबला करना है एवं गाँधीजी के सपनों के रामराज्य को साकार करना है। १५ अगस्त हम हर वर्ष मनाते हैं, लेकिन जिस राष्ट्र का गण (जनता) दुखी हो तो इस पर्व को मनाने का क्या फायदा?

दो आवाज हम सभी भारत की सन्तान हैं,
है करोड़ों देह, लेकिन एक मन, एक प्राण हैं।

राष्ट्र कवि के उद्‌गार में याद रखना हैः-

अटल चुनौती अखिल विश्व को, भला बुरा चाहे जो माने,
डटे हुए हैं राष्ट्र धर्म पर, विपदाओं में सीना ताने,
लाख लाख बलिदान हुए, तब हमने यह संस्कृति पाई
कोटि कोटि सिर चढ़े तभी, इसकी रक्षा सम्भव हो पाई।

आओ पुनः एक बार हम सभी इस भारत माता को प्रणाम करते हुए प्रतिज्ञा करें कि हमारा यह राष्ट्र भारत, संसार में

पुनः अपना गौरव प्राप्त करे। हम राष्ट्रीय ध्वज को प्रणाम करते हुए इसकी आन-बान-शान को जिन्दा रखेंगे-

मंगल पथ कंटीले होते, अनुभव यही बताता है,
इसी मार्ग पर चलने वाला, विजय ध्वज फहराता है।
विश्व विजय का सपना अपना, अब साकार करेंगे हम,
शक्ति संगठित राष्ट्र बन, जन आधार बनेंगे हम।

हमको उन शहीदों का भारत बनाना है, आधी-अधूरी आजादी की जगह संपूर्ण आजादी दिलानी है। देश को हानि दुष्टों से कम तथा सज्जनों की उदासी से अधिक होती है। इसलिए स्वयं का मौन तोड़कर दूसरों को जगाना है। आज के इन नेताओं को मालूम नहीं कि आजादी की कीमत क्या है? देश स्वतंत्र कैसे हुआ?

कैसे हुआ स्वतंत्र देश ये, नेताओं को ज्ञान नहीं,
शायद गाँधी, भगत, बोस-शहीदों का अब ये हिन्दुस्तान नहीं।

हम सभी देशवासियों का परम धर्म कर्तव्य है कि भारतीय संस्कृति के वेदों के अनुसार व अपने पूर्वजों के आदर्शों को सामने रखकर सभी प्रकार के अन्यायों से मुक्त भारत बनाने के लिए मिलकर कार्य करना है व भारत को विश्व की महाशक्ति बनाने में अपना तन-मन-धन व समय की आहुति अर्पित करनी है। राष्ट्र को 'भारत' शब्द का गौरव अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, इसके लिए इंडिया शब्द का प्रयोग बिल्कुल बन्द करना है। साथ ही हमारी मातृभाषा हिन्दी को सम्मान दिलाना है। पुनः सभी भारतवासियों को जिन्होंने इस आजादी के लिए संघर्ष किया और बलिदानों की आहुति दी, नमन करता हूँ एवं श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

खुशियाँ हो चाहे या गम हो, जोश हमारा कभी न कम हो,
जब तक अपने दम में दम हो, राष्ट्र हमेशा सर्व प्रथम हो।
तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें ना रहें।।

- १४३१ चाणक्य मार्ग,
सुभाष चौक, जयपुर, चलभाष-०९४१४२५१७३९

□□□

आपकी लोकप्रिय पत्रिका
सत्यार्थ सौरभ को
संबल प्रदान करने हेतु
श्री राजेश तिवारी, ग्वालियर
ने संरक्षक सदस्यता (रु. ११०००)
ग्रहण की है।
अनेकशः धन्यवाद

विजय पालकी सजने दो......

पाक हुआ नापाक बहुत, अब तो रणभेरी बजने दो।
मातृभूमि की रक्षा खातिर, विजय पालकी सजने दो।।
रणवीर बाँकुरों की धरती का, हर बच्चा भरता हुँकार।
सारा देश सजग होकर, कुर्बानी देने को तैयार।
सेनाएँ सन्नद्ध खड़ीं जो, चक्रव्यूह उसे रचने दो।।
मातृभूमि की........

जंग-वंग की आशंका को, सच में बदलो रणबंका।
तोप-तमंचे-आग्नेयास्त्र से, जला दो पापी की लंका।
मची हुई सरहद पे हलचल, उसे नहीं अब थमने दो।।
मातृभूमि की........

ऐलान-ए-जंग अब करो गर्व से, करो नहीं अब कोई बात।
इस्लामाबाद पहुँचेंगे, भारत के बेटे अब रातों रात।
बात बनाये चाहे कोई, नहीं युद्ध से हटने दो।।
मातृभूमि की.......

माँ का आशीर्वाद लिये, भारत के बेटे लड़ते हैं।
बहन की राखी और सुहाग का, जज्बा लेकर बढ़ते हैं।
कफन लिये जो निकले घर से, अब संग्राम में डटने दो।।
मातृभूमि की........

आतंकी के इन विषवृक्षों का, कब तक पीड़ सहोगे।
मानवता के हत्यारों को, कब तक बाप कहोगे।
कुचलो साँपों के फन 'संजय', उसको नहीं उलटने दो।।
मातृभूमि की........

- क्रान्तिकारी कविः पं. संजय सत्यार्थी, नवादा (बिहार)

रामकथा के कुछ विवादास्पद प्रसंग

गतांक से आगे .... - प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा

मूल वाल्मीकि रामायण के साथ उत्तरकांड को जोड़ने से केवल राम के ही चरित्र में विकृति नहीं आयी, अपितु रावण के अनाचार, अत्याचार तथा बलात्कारों का अतिरंजित वर्णन करके उसके चरित्र को भी अत्यधिक पाशविक बना दिया गया, जो शेष रामायण में वर्णित रावण से मेल नहीं खाता।

रामकथा में कहीं-कहीं द्विअर्थी शब्दों के कारण भी शंकाएँ उत्पन्न हुई हैं। उदाहरणार्थ 'दशरथ' का अर्थ दस रथों का स्वामी नहीं है अपितु दसों दिशाओं में अपना प्रभाव रखने वाले व्यक्ति से है। 'शब्द कल्पद्रुम' में 'दशरथ' की व्याख्या इस प्रकार दी हुई है- 'दशसु दिक्षु गतो रथो यस्य' अर्थात् जिसके रथ की गति दसों दिशाओं में हो अथवा जिसका प्रभाव दसों दिशाओं में हो। इसी प्रकार रावण के लिए जो दशानन शब्द का प्रयोग किया गया, उसका अर्थ भी 'दस मुँह वाला' नही है, बल्कि ऐसे व्यक्ति से है जिसका प्रभाव दसों दिशाओं में हो। श्री अरुण ने अपने ग्रन्थ- 'भारतीय पुरा इतिहास कोश' में दशानन का एक और अर्थ दिया है। वह है, 'चार वेद तथा छः वेदांगों का ज्ञाता'। 'दशानन' के आधार पर ही रावण की बीस भुजाओं की भी कल्पना कर ली गयी, जो वास्तव में गलत है। **युद्ध के समय स्वयं महर्षि वाल्मीकि ने रावण के एक मस्तक तथा दो भुजाओं की बात कही है।** कुछ विद्वानों के अनुसार रावण के लिए 'दशानन' शब्द का प्रयोग उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जिस प्रकार सिंह के लिए कभी-कभी पंचानन (चारों दिशाओं तथा ऊपर एक साथ, देखने वाला) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

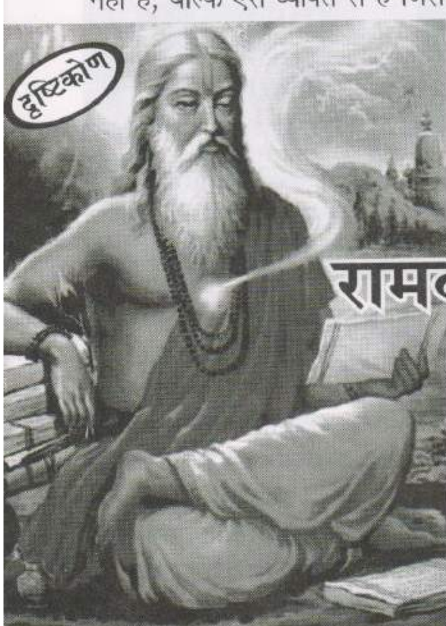

हनुमान, सुग्रीव तथा बाली आदि को बन्दर तथा जामवन्त को रीछ बतलाकर उनकी विशेष प्रकार की मुखाकृति तथा पूँछ आदि की कल्पना करना भी गलत है। वास्तव में उस समय वानर, ऋक्ष तथा नाग आदि जातियाँ भारत में निवास किया करती थीं, जिनका कालान्तर में मानव जाति में समन्वय हुआ। 'मानव' नाम मनु से पड़ा जो इस नयी संस्कृति के प्रवर्तक भी थे। वर्तमान नागालैण्ड में रहने वाले नागा जाति के लोग मूलतः नाग जाति के ही हैं। वानर तथा ऋक्ष जातियों के पूरी तरह मानव जाति में मिल जाने के कारण अब उनका पृथक् अस्तित्व नहीं रहा। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार (वैदिक युग का राजनीतिक इतिहास) के अनुसार 'राम के काल में जिन जातियों को वानर व ऋक्ष आदि कहा गया है, संभवतः वे इन पशुओं की देव रूप में पूजा करती थीं और इसी कारण उनका परिचय इन पशुओं की संज्ञाओं द्वारा दिया जाता था।' अन्य अनेक विद्वानों ने भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए हैं। इन जातियों का अस्तित्व ऐतिहासिक सत्य है और इसलिए उन्हें बन्दर या रीछ बतलाना गलत है। **वाल्मीकि ने जामवन्त तथा हनुमान को वेदज्ञ और व्याकरण का विद्वान् बतलाया है। स्पष्ट ही पशुओं से वेदज्ञ होने की आशा नहीं की जा सकती।**

रामायण में हनुमान के 'लाङ्गूल' की भी चर्चा की गयी है, जिसका सामान्य अर्थ पूँछ होता है। लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि वानरों के 'लाङ्गूल' की तो चर्चा रामायण में है, लेकिन उनकी पत्नियों के 'लाङ्गूल' की नहीं। श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती का इस संदर्भ में विचार है कि वानरों का कोई राष्ट्रीय चिह्न पूँछ जैसा कुछ होता होगा, जिसे 'लाङ्गूल' कहते होंगे। बन्दरों की पूजा करने वालों का ऐसा राष्ट्रीय चिह्न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं कही जा सकती। इस 'लाङ्गूल' को वानर हमेशा अपने साथ रखते होंगे और इसी को जलाने का आदेश रावण ने दिया होगा। जहाँ तक उनके उड़कर कहीं जाने का प्रश्न है, उससे यही लगता है कि उनके पास वायुयान जैसे कुछ यान होंगे, जिनका वे प्रयोग करते होंगे। वानर जाति कलाकौशल में प्रवीण थी। इसलिए उसके पास ऐसे यान होना असंभव नहीं। राम भी लंका से वापिस अयोध्या ऐसे ही एक बड़े यान से लौटे थे जिसका नाम 'पुष्पक विमान' था। इसी प्रकार जटायू को 'गिद्ध' बतलाना भी गलत है। वह सम्राट् दशरथ का मित्र था और सीता उसे 'आर्य' शब्द से संबोधित

करती है। निश्चित ही ऐसा व्यक्ति गिद्ध नहीं हो सकता। श्री जगदीश्वरानंद सरस्वती ने अपने ग्रन्थ 'वाल्मीकि रामायण' में इसे गृध्रकूट का भूतपूर्व राजा बतलाया है, जिसकी जटाएँ बढ़ी हुई थीं और इसीलिए उसे जटायू कहा जाता था। वाल्मीकि ने जटायू को कहीं कहीं 'पक्षी' भी कहा है। लेकिन श्री जगदीश्वरानंद के अनुसार यहाँ 'पक्षी' का अर्थ जानवर से नहीं अपितु विद्वान् से है। इस तर्क के पक्ष में 'तांड्य ब्राह्मण' की यह पंक्ति प्रस्तुत की जा सकती है-

'ये वै विद्वांस्ते पक्षिणो येऽविद्वांस्तेऽपक्षाः' (ता. ब्रा १४-१-१३) अर्थात् 'जो विद्वान् होते हैं वे पक्षी और जो अविद्वान् होते हैं वे पक्षरहित हैं।' इसी प्रकार जटायू के लिए तीक्ष्णतुंड शब्द का प्रयोग किया गया है, लेकिन तुंड का अर्थ चोंच भी होता है और मुँह भी। जो लोग जटायू को गिद्ध समझने की भूल करते हैं, वे इसका अर्थ 'पैनी चोंच वाला' मानेंगे और जो उसे मनुष्य समझते हैं, वे इसका अर्थ 'रौबीले मुँह वाला' या 'प्रभावशाली व्यक्तित्व' वाला ही मानते हैं। रामकथा में यत्र-तत्र आने वाली इस प्रकार की बातों को काव्यसुलभ अलंकारिक भाषा भी माना जा सकता है। यह कहा गया है कि अहिल्या शाप के कारण पत्थर की हो गयी थी और श्री राम ने उससे अपने चरण छुआकर उसे वापिस

अहिल्या का रूप दे दिया था। यह बात वैज्ञानिक दृष्टि से तो गलत है ही, इसके साथ इस दृष्टि से भी अनुचित है कि क्षत्रिय राजा राम, ऋषि-पत्नी अहिल्या (चाहे वह पत्थर की ही क्यों न हो) को अपना पैर छुआएँ। वाल्मीकि रामायण में अहिल्या का पत्थर रूप धारण करने की चर्चा नहीं है। वाल्मीकि के अनुसार अहिल्या को केवल यह शाप दिया गया था कि वह वर्षों तक तपस्या करती हुई पृथ्वी पर ही शयन करे। श्रीराम जब आश्रम में आए तो उन्होंने आगे बढ़कर अहिल्या के चरण छुए।

सामान्य जनधारणा यह है कि रावण की मृत्यु विजयादशमी को हुई तथा उसके बाद दीपावली के दिन राम वापिस अयोध्या लौटे थे। तथ्यों को देखते हुए ये दोनों ही बातें गलत प्रतीत होती हैं। 'रामायण' के अयोध्या कांड (तृतीय सर्ग- ४) के अनुसार मूलतः राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना तय हुआ था और उसी माह उन्हें १४ वर्षों के लिए वनवास जाना पड़ा था। इसके अनुसार १४ वर्ष भी चैत्र मास में ही पूरे होते हैं, आश्विन या कार्तिक में नहीं। रावण-वध के बाद उसकी अन्त्येष्टि तथा विभीषण के राज्यारोहण में थोड़ा ही समय लगा, क्योंकि राम को भरत की चिन्ता हो रही थी। वनवास की अवधि पूरी होने को थी और उन्हें निश्चित समय पर अयोध्या पहुँचना था अन्यथा भरत के प्राण त्याग देने की आशंका थी। इसीलिए राम ने विभीषण के इस आग्रह को भी स्वीकार नहीं किया कि वे कुछ दिनों लंका का आतिथ्य स्वीकार करें। **तब विभीषण ने उन्हें पुष्पक विमान से भेजा, जिसमें वे भारद्वाज आश्रम में पहुँचे। वह दिन चैत्र शुक्ल पंचमी का था। इस प्रकार चैत्र में ही रावण वध हुआ और इसी माह में राम वापिस अयोध्या आ गए।** इस घटना से यह प्रतीत होता है कि दशहरा तथा दीपावली का रामकथा से कोई सीधा संबन्ध नहीं है। इन त्यौहारों की लोकप्रियता के कारण ही संभवतः कालान्तर में इनके साथ रामकथा को जोड़ दिया गया।

-प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा
१०/६११ कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर

❑❑❑

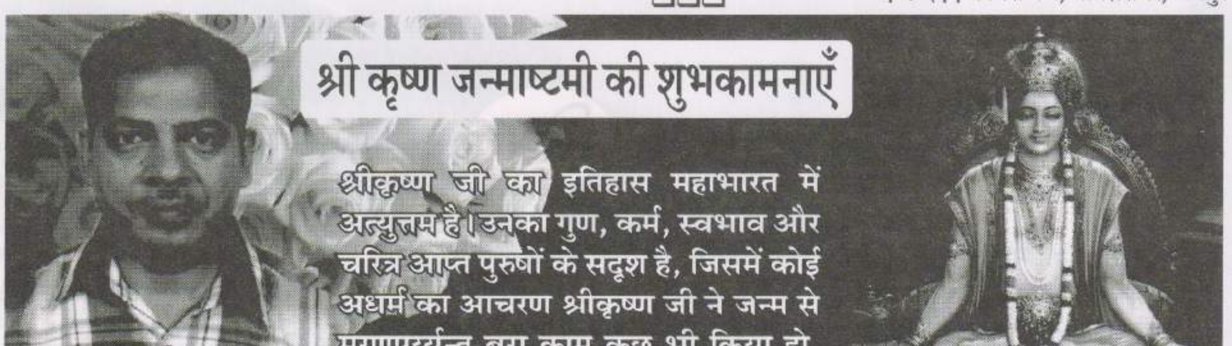

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

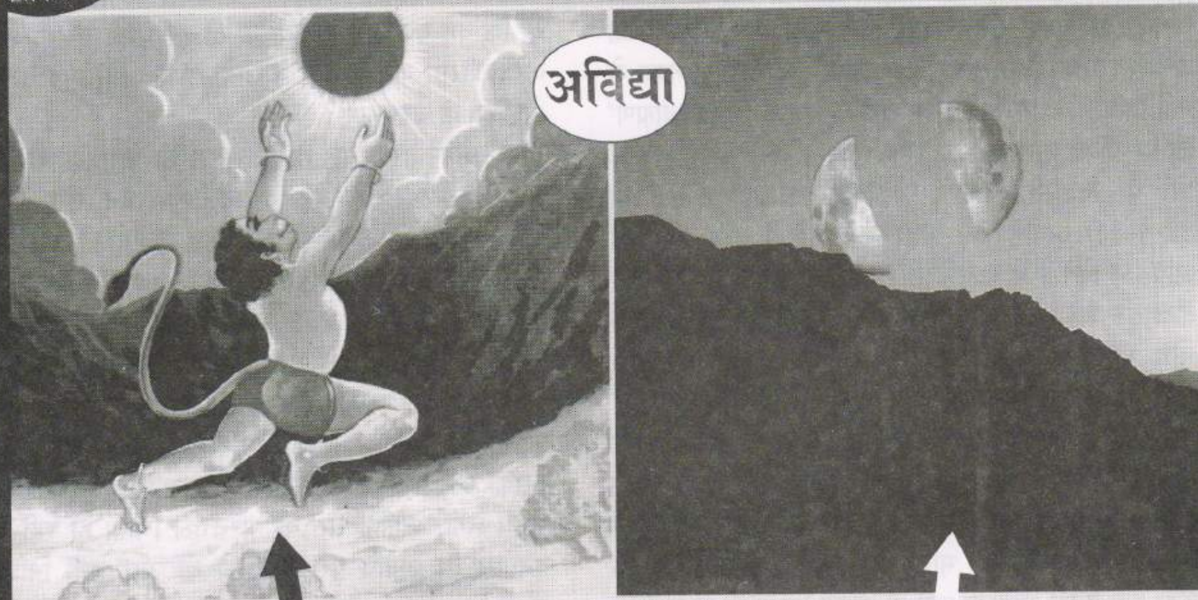

१. बाल हनुमान ने सूर्य को अपने मुँह में ले लिया।

२. मोहम्मद साहब ने अंगुली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर दिये।

कोई कहे कि 'माता-पिता के बिना सन्तानोत्पत्ति, किसी ने मृतक जिलाये, पहाड़ उठाये, समुद्र में पत्थर तराये, चन्द्रमा के टुकड़े किये, परमेश्वर का अवतार हुआ, मनुष्य के सींग देखे और वन्ध्या के पुत्र और पुत्री का विवाह किया' इत्यादि सब असम्भव हैं, क्योंकि ये सब बातें सृष्टिक्रम से विरुद्ध हैं। जो बात सृष्टिक्रम के अनुकूल हो, वही सम्भव है।।

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एक बार अवश्य पढ़ें।

हिन्दी और बदलता आर्थिक परिदृश्य

- हरिकृष्ण निगम

क्या अंग्रेजी हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा देश के विकास के लिए जरूरी है? साथ ही अनवरत प्रचार द्वारा दूसरा मिथक यह गढ़ा गया है कि अंग्रेजी हमें एक सूत्र में बाँधती है। उत्पादों और सेवा की नई विपणन नीतियों के संबंध में अंग्रेजी क्या भारत की अर्थव्यवस्था के लिए उतनी महत्वपूर्ण है? अंग्रेजी हमें यदि जोड़ती है तो उतनी तीव्रता से ही तोड़ती भी है और विभाजन की रेखाएँ भी खींचती है। आज भारत में दो देश हैं-एक उन अभिजात्य या गर्वदम्भियों का जो अंग्रजी में ही सोचते हैं और सामान्य देशवासियों को 'वर्नाक्यूलर' बोलने वाले 'लोकल्स' या 'नेटिव्ज' कहने में नहीं झिझकते हैं। सिर्फ अंग्रेजी के समाचार पत्र ही 'इलीट' वर्ग में आते हैं, हिन्दी व भारतीय भाषाओं के नहीं। टेलीविजन या बालीवुड़ के माध्यम से हिन्दी यद्यपि बोधगम्य बनी है पर उनकी भी विषय वस्तु की चर्चा या विमर्श अंग्रेजी में होता है। देश भाषायी आधार पर कितने रूपों में विभाजित रहता है इसका अनुमान लगाना मुश्किल है।

देश के औद्योगिक विकास के लिए जापान का उदाहरण महत्वपूर्ण है। यह सर्वविदित है कि वहाँ मुट्ठी भर लोग ही हैं जो अच्छी तरह अंग्रेजी बोल या लिख सकते हैं। उन्हें अंग्रेजी न जानने पर भी हीन भावना या आत्मग्लानि नहीं। उनकी शिक्षण प्रणाली में गणित, भौतिक, रासायन या जीवनशास्त्र व इतिहास की पढ़ाई के माध्यम पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता है- वे सब जापानी भाषा के माध्यम से उच्चतम स्तर पर अध्ययन कर सकते हैं। इसी तरह उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा पर भी किसी को आक्षेप करने का साहस नहीं। विशेषज्ञों को छोड़कर वहाँ अंग्रेजी की अंधभक्ति लोगों में नहीं है। जापान के साथ-साथ दक्षिण कोरिया, ताइवान, सिंगापुर, चीन, थाईलैण्ड और यहाँ तक कि रूस की प्रगति का नया दौर आज अंग्रेजी का मोहताज नहीं हैं। वे जानते हैं कि उनके आर्थिक विकास के लिए कुछ और ही तत्व अपरिहार्य है, मात्र अंग्रेजी पर निर्भरता नहीं। विकास के सोपानों की नींव कहीं और ही रखी होती है। हम इसके विपरीत एक झूठा सपना बेच रहे हैं और अंग्रेजी भाषा को ही प्रगति का अकेला मूलमंत्र मानने लगे हैं। हिन्दी हमारे आत्मगौरव का प्रतीक है, शायद यह दोहराना इतना प्रासंगिक न होगा जितना कि यह कहना कि हिन्दी को आर्थिक उदारीकरण का नया कवच मिला है। मनोरंजन की दुनिया के अलावा चमक दमक वाले घरेलू उत्पादों व नई सेवाओं के विपणन में भी आज के श्रव्य दृश्य मीडिया ने जैसे रोमन लिपि में सारे भारत को हिन्दी सिखाने का दायित्व स्वतः अपना लिया है। लेह से लेकर त्रिवेन्द्रम तक या सभी बड़े महानगरों में चटपटे हिन्दी के वाक्यांश रोमन लिपि में मिलेंगे चाहे वह 'ठण्ड मतलब कोला कोला' हो या 'यह दिल माँगे मोर! सरकारी कार्यालयों व सार्वजनिक उपक्रमों के कार्यालयों के प्रमुख स्थानों पर आज का शब्द सिखाने से मनोरंजन, उद्योग का व्यापक प्रचार कई गुना अधिक सार्थक सिद्ध हो रहा है। आज का नया प्रश्न वस्तुतः यह उठना चाहिए कि क्या बदलते आर्थिक परिदृश्य में हिन्दी लाभ या मुनाफा की भाषा के रूप में परिवर्तित की जा सकती है? गलाकाट प्रतियोगिता देश में ग्राहक सेवा की गुणवत्ता के नए मानदण्ड बना चुकी है। यदि हिन्दी आज उपभोक्ताओं की समग्र संचेतना या उनके अधिकारों के आन्दोलनों से जुड़ जाए तो चाहे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद हों उन्हें भी कानूनी अधिनियमों के अन्तर्गत हिन्दी के प्रयोग के लिए बाध्य किया जा सकता है। जिस तरह अमेरिका व दूसरे विकसित देशों में हर उपभोक्ता का यह मौलिक अधिकार है कि हर उत्पाद व मान्य सेवा उसे समझ में आने वाली भाषा से मिलना अनिवार्य है, हमारे देश में ग्राहकों की संगठित जागरूकता

नदारद है। हमारा यह भ्रम है कि अमेरिका व यूरोप में सभी अंग्रेजी समझते हैं जो असत्य है। न्यूयार्क जैसे महानगर में भी हर सूचना या उत्पादों की पहचान अंग्रेजी के साथ साथ स्पेनी भाषा में रहती हैं और साथ में दूसरी भाषायें जैसे फ्रेंच या जर्मन भी प्रयुक्त होती हैं। **फ्रांस और जर्मनी में आज भी अंग्रेजी के अनावश्यक प्रयोग को हेय दृष्टि से देखा जाता है। फ्रांस में तो सरकारी तौर पर फ्रेंच की जगह अंग्रेजी प्रयुक्त करने पर दण्ड का भी प्रावधान है।**

शायद आज यह दोहराने की जरूरत नहीं है कि हिन्दी सुबोध, सरल, सहज और बोधगम्य है, व्यापक है, वैज्ञानिक है, इसकी लिपि व वर्तनी मानक है- जैसी लिखी जाती है वैसे ही इसका उच्चारण होता है। इसकी वर्णमाला और वर्तनी अर्थोग्राफी- भाषाशास्त्र की दृष्टि से वैज्ञानिक है।

हिन्दी की अकेली समस्या अंग्रेजी की सामाजिक श्रेष्ठता और हमारी हीनता की ग्रंथि है जिसने हमारे समग्र मनोबल को तोड़ रखा है।

ए-१००२-पंचशील हाईटस, महावीर नगर, कान्दिवली(पश्चिम), मुम्बई-४०००६७

❑❑❑

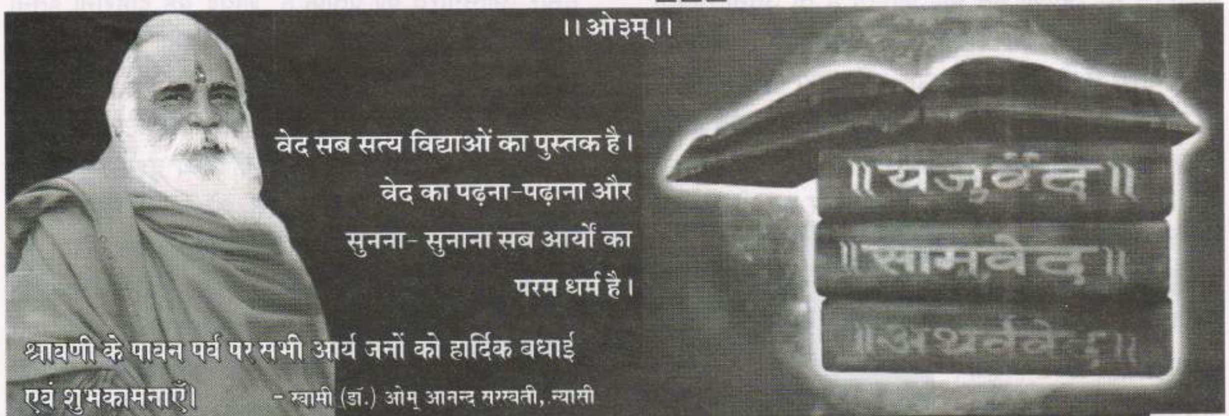

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

समाचार

वेद महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, भरतपुर के तत्वावधान में दिनांक ३१ मई २०१४ से ३ जून २०१४ तक १८ वें विराट आर्य वेद महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य वेदप्रिय शास्त्री के ब्रह्मत्व में जहाँ यज्ञ का कार्यक्रम अतीव प्रेरणास्पद रहा वहीं आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. सोमदेवशास्त्री, आचार्य श्री संजय याज्ञिक, श्री मदनमोहन आर्य एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक व भजनोपदेशिका अलका देवी आर्य के उद्बोधन प्रेरणास्पद रहे। - रामसिंह वर्मा, कार्यक्रम संयोजक

युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में ८ वाँ आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन दिनांक १५ जून २०१४ को आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर में सम्पन्न हुआ। इसी क्रम में नवाँ परिचय सम्मेलन २० जुलाई २०१४ को प्रातः १०.०० बजे से आर्य समाज, कीर्तिनगर नई दिल्ली में आयोज्य है।

- प्रकाश आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

निःशुल्क हड्डी जोड़ दर्द निवारण शिविर

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा निःशुल्क हड्डी जोड़ दर्द निवारण शिविर डॉ. राहुल खन्ना के नेतृत्व में श्री राकेश चौधरी, श्री

देवेन्द्र कुमार एवं श्री वीरेन्द्र कुमार ने इस शिविर में एक सौ छियानवे महिलाओं व पुरुषों की बीएमडी जाँच की एवं दर्द निवारण के अन्य उपाय भी बताये। डॉ. खन्ना ने दृश्य-श्रव्य माध्यम से आस्टीयोपोरोसिस पर जानकारी दी। समाज प्रधान श्री भँवर लाल ने सबका स्वागत किया एवं शिविर संयोजक डॉ. तापड़िया ने आये हुए चिकित्सक एवं फिजियोथैरेपिस्ट आदि का परिचय दिया। आर्य समाज के मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने जहाँ सबका धन्यवाद किया वहीं श्री भूपेन्द्र शर्मा ने सुन्दर संचालन किया। - रामदयाल मेहरा

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ४ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली**- ४ के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं।- श्री गोविन्द सोनी, बीकानेर, श्री चतुर्भज गर्ग, बीकानेर, कोमल तेज कुमार सोनी, बीकानेर, श्री राम कुमार, बोकारो, श्री आशीष कुमार भारद्वाज, महेन्द्रगढ़, श्री रविदेव आर्य, हाथरस, श्री विजयवीर सिंह यादव, एटा, श्री संजय कुमार, महेन्द्रगढ़, श्री हर्ष वर्द्धन आर्य, नवादा, श्रीमती हर्ष नारंग, दिल्ली। **इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।**

आर्य समाज, छोटी सादड़ी के निर्वाचन

दिनांक १५.६.१४ को आर्य समाज के संरक्षक श्री मोहन लाल एवं डॉ. वृद्धिशंकर जी उपाध्याय की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुए जिसमें प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष का दायित्व क्रमशः श्री बाबूलाल पाटीदार, श्री महेशशर्मा सुमन व श्री जमनालाल शर्मा को दिया गया। सभी को हार्दिक बधाई। - मंत्री आर्य समाज, छोटी सादड़ी

प्रतिस्वर

आदरणीय अशोक आर्य जी, सादर वन्दे।
सत्यार्थ सौरभ का जनवरी २०१४ का अंक मिला। धन्यवाद।
बाँचकर हृत्पुण्डरीक खिला -
नवल अंक पढ़कर मिला, हमें अमित आनन्द।
सामग्री इसकी सुभग, करती बुद्धि आमन्द।
नित 'सौरभ' बिखरा रहे, जगा रहे आलोक।
पिला रहे हैं सोमरस, नासिर 'आर्य अशोक'।।
खिला रहे मन-सुमन, मिटा रहे हैं शूल।
कुंजों में हैं कर रहे ,मौसम नित अनुकूल।। - डॉ. मिर्जा हसन नासिर, लखनऊ

आदरणीय भाई अशोक जी,
परसों ही टंकारा सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर समाप्त कर लौटी हूँ। दो माह पूर्व लिखी रचना भेज रही हूँ। सत्यार्थ सौरभ नियमित मिल रही है। बहुत समय के पश्चात् कोई आर्य पत्रिका इतनी सुन्दर सारगर्भित लेखों से ओतप्रोत है। आपको व सभी सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को मेरा बहुत बहुत साधुवाद। - साध्वी उत्तमा यति

सभी समस्याओं का समाधान है वेदों में

आर्य समाज, विज्ञाननगर के सभागार में गणमान्य आर्यजनों के मध्य अपने सम्भाषण में आर्यावर्त केसरी के सम्पादक व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य (अमरोहा) ने वेदों के वास्तविक स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि परिवार तथा समाज में समन्वय विश्वशांति एवं विश्व बन्धुत्व जैसे विषयों के संदर्भ में जो गंभीर चिन्तन वेदों में उपलब्ध है वह अन्यत्र नहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज जिला सभा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अरविन्द पाण्डेय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। - राकेश चड्ढा, मंत्री आर्य समाज, विज्ञान नगर, कोटा

सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर में दिनांक २२ अगस्त से २४ अगस्त तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें देहरादून से सत्यपाल सरल एवं सार्वदेशिक आर्य वीरांगना की प्रधान संचालिका डॉ. साध्वी उत्तमायति पधार रही हैं। दिनांक ३१ अगस्त को आर्य समाज प्रांगन में सेवानन्द सरस्वती स्वाधीनता सेनानी की पुण्य तिथी पर दिव्य वैदिक ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। - कमलेश कुमार, मंत्री- आर्य समाज

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१४
के अवसर पर
भव्य भजनोपदेशक सम्मेलन
११-१२ अक्टूबर

इस महापर्व में सम्मिलित होने हेतु सर्वश्री नरेश दत्त, कैलाश कर्मठ, सत्यपाल मधुर, योगेश दत्त, मामचन्द पथिक, राजेश प्रेमी, विजयानन्द, जगत् वर्मा, नरेश निर्मल, महाशय रणवीर सिंह, सुदेश आर्या आदि २० से ऊपर भजनोपदेशकों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। अन्य भजनोपदेशकों की स्वीकृति प्राप्त हो रही है। इस अवसर पर आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. सोमदेव शास्त्री, माननीय बेगराज जी, माननीय सत्यपाल जी पथिक, पं. सत्यपाल सरल जी के उपस्थित रहने की संभावना है। आप सभी अधिकाधिक संख्या में पधारने का मानस बना सूचित करें।

पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती नागरिक अभिनन्द एवं आर्यावर्त्त (चित्रदीर्घा) लोकार्पण समारोह

वैदिक विज्ञान में सोम

- कृपाल सिंह वर्मा

धन्य हैं वे महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने सर्वप्रथम वेदों के वैज्ञानिक भाष्य प्रस्तुत किए। ये ही भविष्य में भारतवर्ष की सर्वोच्चता का आधार बनेंगे।

वेदों में विज्ञान अलंकारिक काव्यात्मक भाषा में अभिव्यक्त किया गया है। सामवेद में देवताओं के गुणों का वर्णन किया गया है। मुख्य रूप से तीन देवताओं के गुणों का वर्णन मिलता है। वे हैं १. अग्नि २. इन्द्र ३. सोम।

वैदिक, ऋचाओं के तीन प्रकार के अर्थ हो सकते हैं- १. आध्यात्मिक अर्थ २. आधिभौतिक अर्थ ३. आधिदैविक अर्थ। हमारा उद्देश्य केवल आधिदैविक अर्थों को समझने का प्रयास करना है अर्थात् हम केवल जड़ देवताओं तक सीमित रहेंगे।

अग्नि का आशय है भौतिक अग्नि, इन्द्र का अर्थ है विद्युत् तथा सोम का अर्थ है- अग्नि तथा विद्युत् का कारण द्रव्य। अग्नि तथा विद्युत् के बारे में थोड़ा बहुत सभी जानते हैं। परन्तु सोम के बारे में कुछ विशेष है। सोम को कहते हैं अग्नि तथा विद्युत् का कारण द्रव्य। इन्द्र अर्थात् विद्युत् वायु तत्त्व के अन्तर्गत आता है।

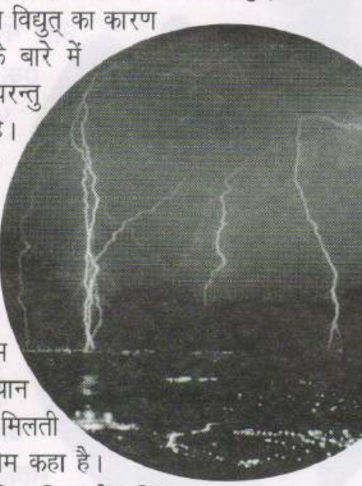

भोजन से शरीर को शक्ति मिलती है। भोजन में सोम निहित है। परमात्मा का ध्यान करने से आत्मा को शक्ति मिलती है। इसलिए परमात्मा को सोम कहा है।

कुछ तरल पदार्थों की रासायनिक क्रिया में शक्ति मिलती है। इसलिए तरल पदार्थों में सोम है। लकड़ी पेट्रोल आदि के जलने से अग्नि मिलती है, इसलिए इनमें सोम है। मैग्नेटिक फील्ड को विद्युत् में परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए मैग्नेटिक फील्ड भी सोम का एक रूप है।

सामवेद ऋचा क्रम सं. ५२७ में कहा है-

'सोमः जनिता इन्द्रस्य' अर्थात् सोम इन्द्र (विद्युत्) का उत्पादक है।

'सोमः जनिता अग्नि' अर्थात् सोम अग्नि का उत्पादक है।

वैदिक विज्ञान के अनुसार अग्नि, इन्द्र (विद्युत्) तथा सोम परमाणुओं से मिलकर बने हैं। साठ परमाणुओं से मिले का नाम एक अणु होता है। अणु सोम का सबसे छोटा कण होता है। दो अणु का एक द्व्यणुक जो वायु अर्थात् इन्द्र अर्थात् विद्युत् है। तीन द्व्यणुक की अग्नि होती है।

अग्नि में तीन गुण होते हैं- १. रूप २.स्पर्श ३.शब्द

वायु (इन्द्र) में दो गुण होते हैं। १.स्पर्श २.शब्द

सोम में एक गुण होता है- १.शब्द (ध्वनि)

संसार के प्रत्येक पदार्थ में सोम निहित होता है। ईन्धन में निहित सोम अग्नि के रूप में प्रकट होता है। तरल पदार्थों में निहित सोम रासायनिक क्रियाओं द्वारा विद्युत् धारा के रूप में प्रकट होता है। अग्नि तथा विद्युत् द्वारा उत्पन्न प्रकाश फिर सोम रूप में बदल जाता है। दीपक बुझाने के बाद प्रकाश कहाँ चला जाता है?

उत्तर- प्रकाश सोम में परिवर्तित हो जाता है। सोम में रूप तथा स्पर्श का गुण नहीं होता। इसलिए वह न देखा जा सकता है तथा न ही स्पर्श किया जा सकता है। सोम आकाश तत्व के अन्तर्गत आता है जिसमें केवल शब्द का गुण पाया जाता है। इन्द्र अर्थात् विद्युत् धारा में स्पर्श तथा शब्द गुण होता है। परन्तु जब तार में विद्युत धारा चलती है तो तार के चारों ओर उत्पन्न मेग्नेटिक फील्ड में स्पर्श का गुण नहीं होता। केवल शब्द का गुण होता है। जब जनरेटर द्वारा मेग्नेटिक फील्ड को विद्युत् में बदल देते हैं तो विद्युत् में स्पर्श का गुण आ जाता है। सोम को इन्द्र में इन्द्र को सोम में बदला जा सकता है।

सामवेद के ऋचा संख्या ५१२ में कहा है-

'सोमो य उत्तमं हवि' अर्थात् सोम सर्वोत्तम हवि अर्थात् शक्ति का सर्वोत्तम स्रोत है।

सामवेद की ऋचा क्र.सं. ५२७ है-

सोमःपवते जनिता मतीनां, जनिता दिवो जनिता पृथिव्या।
जनिताग्ने जनिता सूर्यस्य, जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः॥

निरुक्तकार महर्षि यास्क ने इस ऋचा की निम्न प्रकार व्याख्या की है-

आदित्य रश्मियों को प्रकाश कर्म का कारण होने से सोम की बुध्दि का उत्पादक कहते हैं। आदित्य रश्मियों को द्योतन कर्मों का कारण होने से जनितादिवो कहते हैं। आदित्य रश्मियों को गति कर्म का कारण होने से सोम को अग्नि का उत्पादक कहते हैं। आदित्य रश्मियों को प्रकाशमान कर्मों का कारण होने से जनिता सूर्य कहा जाता है। सूर्य रश्मियों को ऐश्वर्य उत्पादक कर्म के कारण इन्द्र का उत्पादक कहा है। आदित्य रश्मियों को व्यापकत्व कर्म का कारण होने से विष्णु का उत्पादक कहा जाता है।' सोम तो इन्द्र, अग्नि आदि का कारण द्रव्य है।

गर्मी तथा प्रकाश अग्नि तत्व के अन्तर्गत आते हैं। इन्द्र (विद्युत) आदि वायु तत्व के अन्तर्गत आते हैं तथा सोम आकाश तत्व के अन्तर्गत आता है।

सृष्टि निर्माण क्रम भी इस प्रकार है-

आकाश (सोम) से वायु अर्थात् इन्द्र अर्थात् विद्युत् का निर्माण। वायु (इन्द्र, विद्युत्) से अग्नि का निर्माण, अग्नि से जल तत्व तथा जल से पृथिवी का निर्माण होता है।

(पूर्व प्रधानाचार्य)
२५३-शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ
चलभाष- ०९९२७८८७७८८

□□□

पञ्चमहायज्ञ

सुखी गृहस्थ का आधार पञ्च महायज्ञ हैं। पञ्च महायज्ञ का यदि सरलतम शब्दों में अर्थ किया जाये तो बनता है- **पाँच सबसे ऊँचे कर्म**। इस अर्थ से ही इनकी उपयोगिता और उपादेयता को समझा जा सकता है। गृहाश्रमी के लिए दैनिक दिनचर्या का नियम पालन करते हुए- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ की प्रक्रिया अवश्यकरणीय बताई है। साथ ही गृहाश्रम में माता-पिता, आचार्य, अतिथि तथा पति के लिए पत्नि, पत्नि के लिए पति को देवता रूप में मानकर पञ्चायतन पूजा का भी पवित्र उपदेश मिलता है। इस प्रकार गृहस्थ में प्रेमपूर्वक स्त्री-पुरुष रहें। बुद्धि-धनादि की वृद्धि करने वाले शास्त्रों को नित्य सुनें और सुनावें। यथाविधि दिन और रात्रि की सन्धि में परमेश्वर का ध्यान (ब्रह्मयज्ञ) और अग्निहोत्र (देवयज्ञ) अवश्य करना चाहिए।

पितृयज्ञ भी गृहस्थ का कर्त्तव्य कर्म है। श्रद्धा और भक्ति भाव से विद्यमान माता-पिता आदि पितरों की सेवा करना ही पितृयज्ञ और श्राद्धतर्पण है। परम विद्वानों आचार्यादि की सर्व प्रकार से सेवा करना ही ऋषि तर्पण है। वास्तव में माता-पिता, स्त्री, भगिनी, संबधी आदि तथा कुल के अन्य कोई भद्र पुरुष वा वृद्ध हों उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुंदर यानादि देकर अच्छे प्रकार तृप्त करना जिससे उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहे, यही श्राद्ध और तर्पण है।

चौथा 'बलिवैश्वदेव' यज्ञ है। जब भोजन सिद्ध हो जाये तब उसमें से खट्टा, लवणान्न और क्षारयुक्त को छोड़कर, घृत-मिष्ट युक्त अन्न लेकर मंत्रों से आहुति दे दें। तथा कुछ भाग पत्ते या थाली में भी मंत्रों से रखता जाय। यदि कोई अतिथि हो तो उसको दे दे नहीं तो अग्नि में ही छोड़ देवे। इसी प्रकार किसी दुःखी बुभुक्षित प्राणी अथवा कुत्ते, कव्वे आदि के लिए छः भाग अलग रख दे पश्चात् उनको दे दिया जाये।

अतिथि यज्ञ भी गृहस्थ का आवश्यक अंग है। यदि अकस्मात् कोई धार्मिक, सत्योपदेशक सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान्, परमयोगी, संन्यासी, गृहस्थ के यहाँ आ जाये तो यथाविधि उसका सत्कार करना, खान-पानादि से सेवा-शुश्रूषा करना परम कर्त्तव्य है। इससे गृहस्थ की प्रतिष्ठा और मर्यादा बढ़ती है। चाणक्य ने एक श्लोक में लिखा है कि- 'आइए यहाँ विराजिए, यह आसन है, बहुत दिनों के बाद दिखलाई पड़े, क्या नई बात है, बाल-बच्चों सहित कुशल से तो हैं? मैं आपके दर्शन से प्रसन्न हुआ'। इस प्रकार जो घर आए हुए का आदर से सत्कार करता है, उसके घर निःशंक मन से जाना चाहिए। सद्गृहस्थ का यही श्रेष्ठ धर्म है कि वह घर पर आए हुए छोटे व्यक्ति को अपने से बड़ा मानें।

समयानुसार गृहस्थ और राजादि भी अतिथिवत् सत्कार करने योग्य हैं। परन्तु पाखण्डी, वेदनिन्दक, वेदविरुद्ध आचरण करने वालों का वाणी मात्र से सत्कार न करें- क्योंकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाते हैं, संसार को अधर्मयुक्त करते हैं, और अपनी सेवा करने वालों को भी अविद्या रूपी महासागर में डुबो देते हैं। इन पाँचों महायज्ञों का अत्युत्तम फल होता है। धर्म की वृद्धि होकर संसार में सुख का संचार होता है।

❑❑❑

\- सम्पादक- अशोक आर्य

दूसरे को भी समझें

कथा सरित

पिता बड़ी बेचैनी के साथ ऑपरेशन थियेटर के बाहर चक्कर लगा रहा था। अन्दर उसका एकलौता पुत्र एक्सीडेन्ट में गंभीर घायल होने के बाद बेहोश पड़ा था और सर्जन हॉस्पीटल में उपलब्ध नहीं थे। हॉस्पीटल स्टाफ ने सूचना दी कि डॉ. साहब को फोन कर दिया गया है और वे जल्दी ही आ जायेंगे। पिता बार-बार अस्पताल के दरवाजे की ओर देख रहा था और जैसे-जैसे समय गुजर रहा था उसकी बैचेनी बढ़ती ही जा रही थी और मन ही मन डॉक्टर और हॉस्पीटल स्टाफ को कोस रहा था कि ये कैसे लोग हैं इन्हें मरीज का तनिक भी ध्यान नहीं। इतने में ही सामने से डॉक्टर साहब आते दिखे। जैसे ही तेज-तेज चलते हुए डॉक्टर ऑपरेशन थियेटर की ओर जाने लगे, पिता उन्हें रोककर खरी खोटी सुनाने लगा। डॉक्टर ने गंभीरता से कहा अभी आप शांत हो जाइये मुझे मेरा कार्य करने दीजिए। इस पर पिता और गरम होकर बोला कि आपको मेरे बेटे की जरा भी चिन्ता नहीं है। आने में इतनी देर लगा दी। सोचिए अगर आपका बेटा मौत से जूझ रहा होता तो आपकी क्या दशा होती? आप मेरी पीड़ा को नहीं समझ सकते। डॉक्टर ने विनम्रता से इतना ही कहा कि धैर्य रखिए मैं अन्दर ऑपरेशन थियेटर में जा रहा हूँ। ईश्वर ने चाहा तो आपका बच्चा बच जाएगा। यह कहकर अतिशीघ्र डॉक्टर अन्दर चले गए। ऑपरेशन काफी देर तक चला। इस बीच में पिता बेचैन ही रहा। ऑपरेशन के पश्चात् जब डॉक्टर बाहर निकले तो पिता तेजी के साथ ऑपरेशन की सफलता असफलता और अपने बच्चे की स्थिति जानने के लिए डॉक्टर की ओर बढ़ा। वह डॉक्टर को कुछ कहना ही चाहता था कि डॉक्टर ने उसे कहा कि 'आपका बेटा ठीक हो जायेगा बाकी की सारी बातें आप नर्स से पूछ लीजिए।' यह कहकर डॉक्टर तेजी के साथ वहाँ से चले गए। पिता ने आती हुई एक नर्स को रोका और डॉक्टर के प्रति अपना गुस्सा प्रकट करते हुए कहा कि देखिए इनमें कितना घमण्ड है थोड़ा रुककर के मुझे सारी बातें नहीं बता सकते थे? मेरा बेटा मौत से जूझ रहा है। डॉक्टर को मुझसे बात करनी ही चाहिए थी। इनका बेटा ऐसी स्थिति में होता तो पता चलता। नर्स ने पिता को रोका और अश्रुभरी आँखों के साथ कहा कि आपको पता नहीं कि अभी कल डॉक्टर साहब का एकलौता पुत्र एक्सीडेन्ट में मारा गया। आज उसका अन्त्येष्टि संस्कार था। जब आपका बेटा घायल होकर के यहाँ अस्पताल में आया और हमने डॉक्टर साहब को फोन किया तो उस समय वे अन्त्येष्टि क्रिया में ही थे उसे बीच में रोककर डॉक्टर साहब यहाँ आये आपके बच्चे की जान बचायी और अब वे तेजी से यहाँ से इसलिए गए कि उन्हें जाकर अपने मृत पुत्र की अन्त्येष्टि क्रिया को पूरा करना है। यह सुनकर पिता हक्का बक्का रह गया उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह किस प्रकार माफी माँगे। वस्तुतः प्रायः हम दूसरे के बारे में अपनी राय कायम कर लेते हैं उनकी परिस्थितियों का जानने का प्रयास भी नहीं करते और अपनी राय को ही सत्य समझते हैं। ऐसा करना ठीक नहीं।

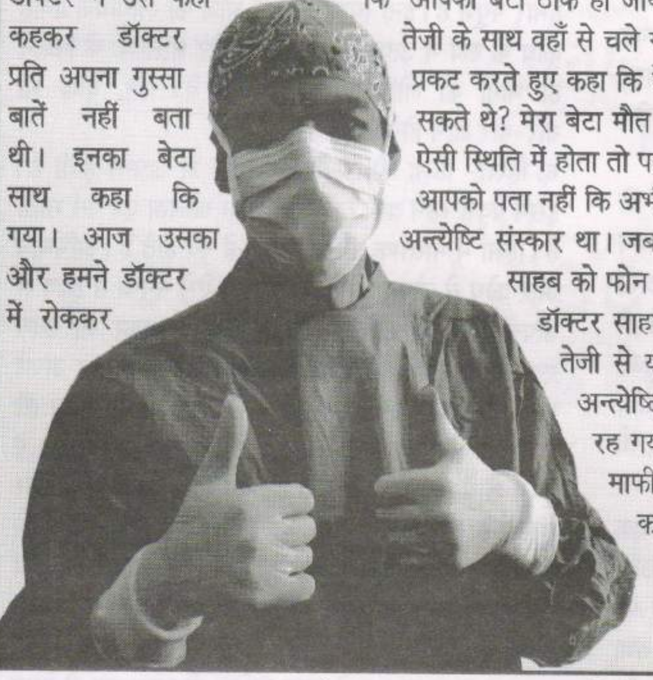

प्रस्तुति- डॉ. अमृतलाल तापड़िया

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी

मानसिक स्वास्थ्य एवं सदाचार

प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य का मन बिगड़ता है,उसका स्वभाव भी बिगड़ जाता है। असमय, असत्य, अभिमान, ईर्ष्या, दम्भ, क्रोध, हिंसा और कपट आदि दुर्गुण ही बिगड़े स्वभाव के लक्षण हैं। ये सूक्ष्म रोग हैं। दुःस्वभाव वाला व्यक्ति इन्द्रियों के तेज और शक्ति को खो बैठता है और शरीर को भी रोगी बना देता है। अब यहाँ किस दोष से कौन रोग होता है, थोड़ा इस पर भी विचार कर लें।

१. असंयम-जीभ को असंयमी रखने से वह चाहे जैसे स्वाद में रस लेने लगती है और चाहे जितना खाने को आतुर रहती है। परिणामस्वरूप पेट में अधिक अयोग्य भोजन चला जाता है और वह पेट या अंतड़ियों में रोग उत्पन्न करता है। इसी प्रकार जीभ के असंयमी होने पर यदि वह चाहे जैसी वाणी उच्चारण करे तो जीभ द्वारा सम्बन्धित मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं को हानि पहुँचती है और कुछ समय पश्चात् जीभ कैंसर या लकवा हो जाने की स्थिति में पहुँच जाती है। यह देखकर हमें भी सीखना चाहिए। इसी प्रकार शरीर की समस्त इन्द्रियाँ भी असंयमी व्यवहार से ही अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करती हैं।

२. असत्य- असत्य बोलने वाले व्यक्ति की शक्ति नष्ट हो जाती है और वह सामान्य रोग का शिकार हो जाता है। जीवन शक्ति का आधार 'तेज' है और वह 'तेज' असत्य से नष्ट हो जाता है। असत्य बोलने वाला तेजहीन हो जाता है। साथ ही असत्य वाणी बोलने से हृदय और मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तुओं की हानि होती है। कुछ समय पश्चात् वह हृदय के रोग, पागलपन, पथरी, लकवा आदि रोगों से भी दुःखी हो जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

३. अभिमान- मनुष्य में वात, पित्त और कफ तीनों को एक साथ सन्निपात के रूप में उत्पन्न करने वाला अभिमान है और इसी से किसी कवि ने कहा है कि 'पाप मूल अभिमान'। यह अभिमान ही मनुष्यों के दुर्गुणों का राजा है और सब दोषों तथा रोगों को आकर्षित करने वाला बलवान लोहे का चुम्बक है। अभिमानी व्यक्ति वायु-पित्त और कफ के छोटे बड़े रोगों से दुःखी रहते हैं।

४. ईर्ष्या- ईर्ष्या करने वाले मनुष्य में पित्त बढ़ जाता है, जिससे उस मनुष्य की इन्द्रियों की तेजस्विता नष्ट हो जाती है। ऐसे मनुष्य की बुद्धि और हृदय पित्त के तेजाब में जल जाते हैं एवं वह किसी काम में प्रगति नहीं कर पाता। ऐसे मनुष्य पित्त, पथरी, जलन, लीवर की खराबी आदि रोगों से दुखी रहते हैं।

५. क्रोध- बिगड़े हुए मन की कामनाओं के पूर्ण न होने से अथवा उनमें विघ्न आने से क्रोध उत्पन्न होता है। कोई मनुष्य दूसरे की हानि कर सकेगा या नहीं वह तो दैवाधीन है, परन्तु सर्वप्रथम वह स्वयं की भी हानि करता है। क्रोध करने से मनुष्य के मस्तिष्क को अपनी बहुमूल्य एवं अधिक ओज शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। इस प्रकार अमूल्य ओज नष्ट हो जाता है। परिणामस्वरूप जीवन शक्ति नष्ट होती चली जाती है। तदुपरान्त क्रोध के मस्तिष्क में आते ही ओज के विशाल एवं विकृत प्रवाह से मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु क्षीण हो जाते हैं। बिजली का प्रवाह घर में लगे हुए बल्ब को पारिमाणिक मात्रा में आने पर तो जलाता है परन्तु अधिक मात्रा में आने पर बल्ब को नष्ट कर देता है। कभी-कभी तो घर को भी हानि पहुँचाता है। इसमें रक्षा पाने के लिए घर के बाहर फ्यूज की व्यवस्था की जाती है। संयम और विवेक ही हमारे फ्यूज हैं। इन्हें त्याग देने पर ओज का अत्यधिक प्रवाह क्रोध के रूप में उत्पन्न हो जाता है और मस्तिष्क के कितने ही भागों को जोखिम में डाल देता है। बल, बुद्धि भी धीरे-धीरे क्षीण होने लगते हैं।

६. हिंसा- हिंसा क्रोध और अभिमान से उत्पन्न होती है। इसमें प्रवृत्त रहने वाले व्यक्ति का सदा खौलता एवं गर्म रहता है। हिंसा में मस्तिष्क और हृदय दोनों गंदे होते हैं। अभिमान और क्रोध से उत्पन्न रोगों के उपरान्त ऐसे मनुष्य में हृदय से उत्पन्न रोग भी होते हैं। पराया दुःख देखकर जो हृदय एकदम नरम बनकर द्रवित होने लगता है वही हृदय अपने दुःखों के सामने वज्र जैसा भी बन जाता है। यह हृदय की सत्य और वास्तविक स्थिति का गुण है। हिंसा वाले मनुष्य में हृदय के ये गुण नष्ट हो जाते हैं। वह लोगों का दुःख देखकर हँसता है और अपने ऊपर दुःख आने पर निम्न श्रेणी का भीरू बन जाता है। तत्पश्चात् हृदय में और सम्पूर्ण शरीर में गर्म रक्त भ्रमण करने से शरीर में वात-पित्त-कफ उत्पन्न होता है।

छलकपट- कपट करने वाला व्यक्ति भी सूक्ष्म रूप से हिंसा ही करता है। परन्तु उसकी हिंसा करने की युक्ति मायामय कपटमय होने से दिखायी नहीं देती। वह साधारण विष जैसी होती है। इससे ऐसे मनुष्य भी ऊपर वर्णित हिंसा वाले व्यक्ति के समान ही रोगों के शिकार बन जाते हैं। उसे जिस रोग का दण्ड मिलता है, वह धीरे-धीरे असर करने वाले विष के समान ही होता है।

- श्री श्याम पाल सिंह
मो.- ०९२६८६३३३५१३
(साभार- योग मंजरी)

□□□

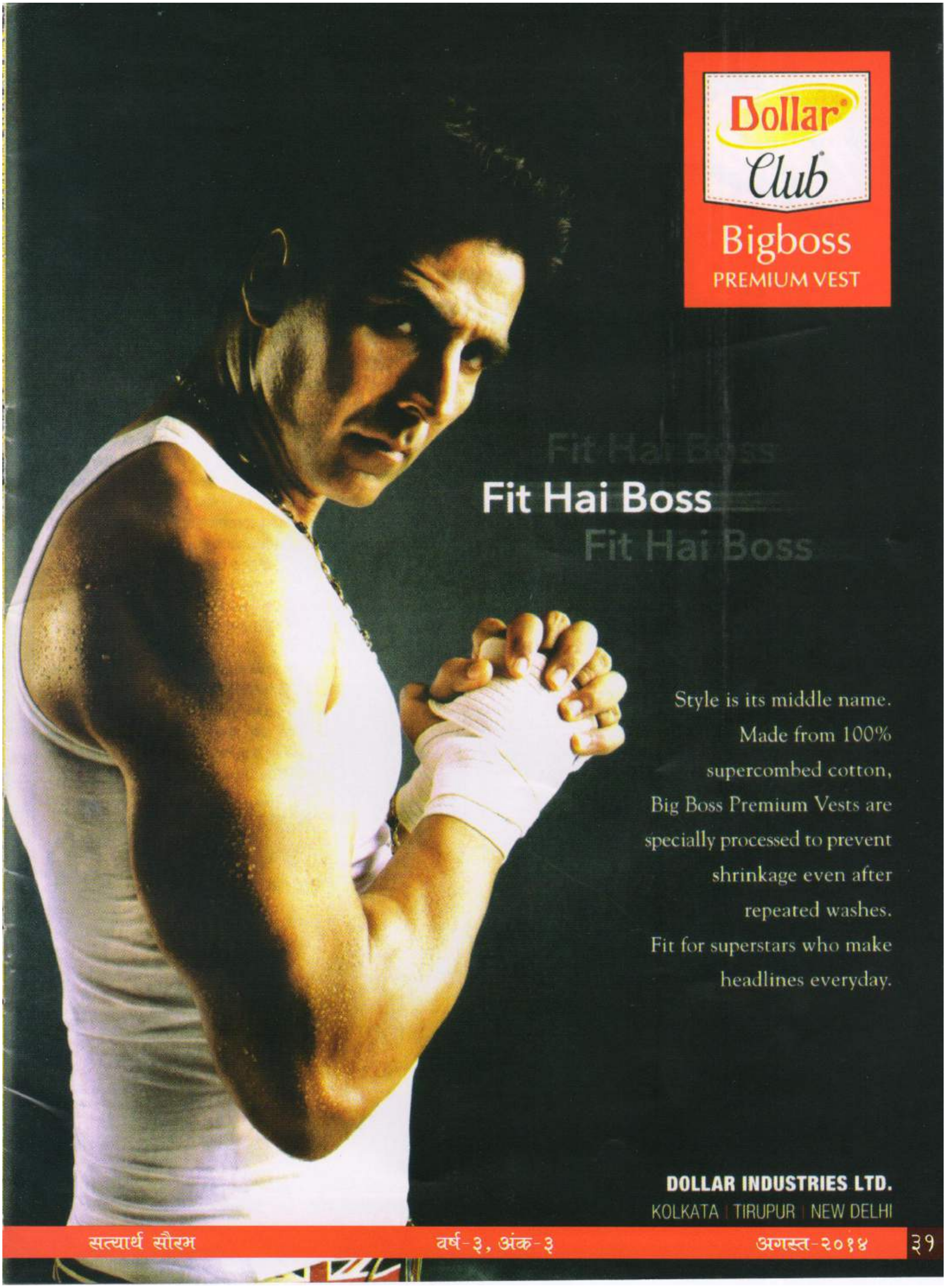

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name. Made from 100% supercombed cotton, Big Boss Premium Vests are specially processed to prevent shrinkage even after repeated washes. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

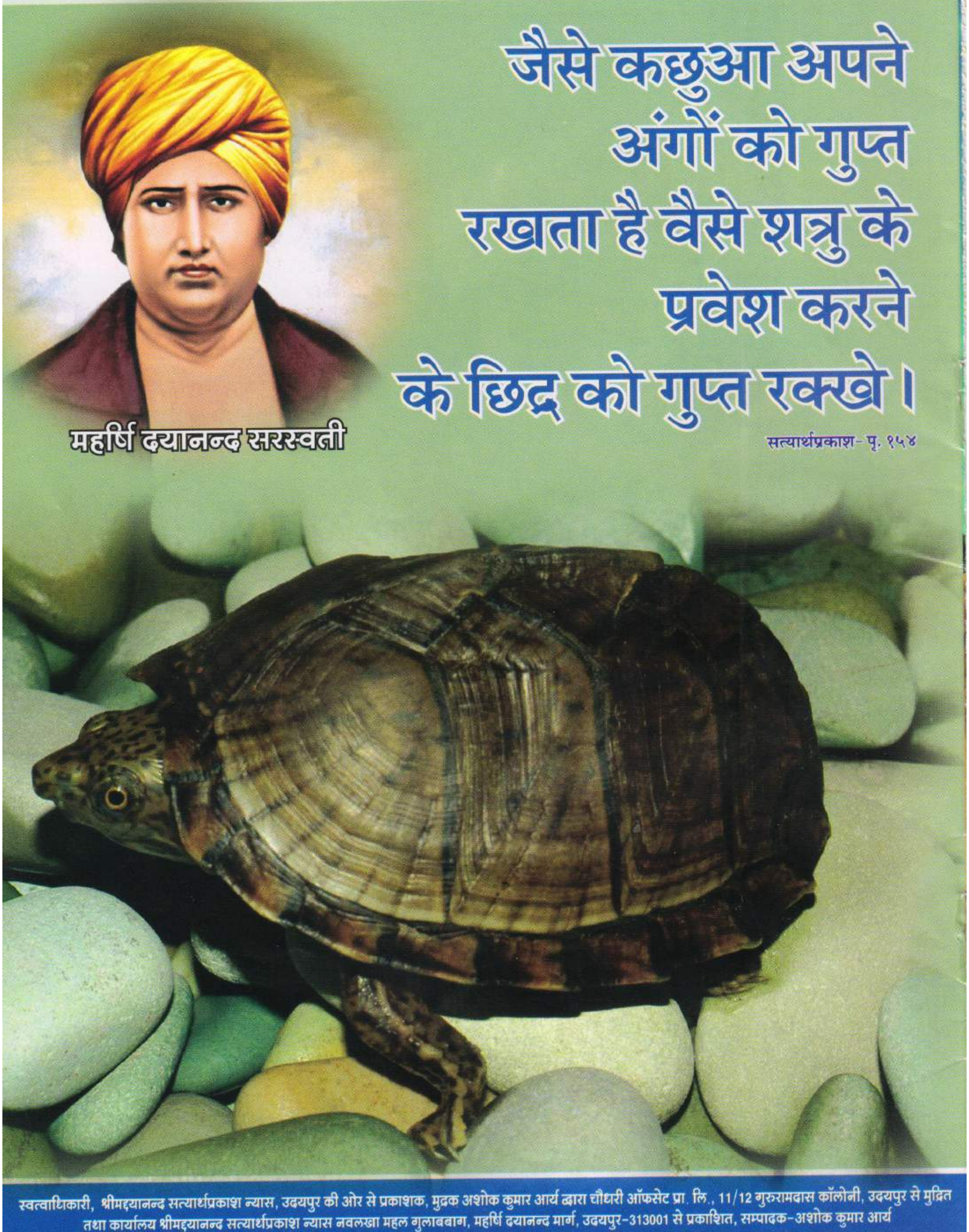

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
COPL/483